रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17 RNI No. 26281/74

8 एवं 15 नवम्बर 2015

मूल्य : 10 रु.	
वर्ष: 72	अंक : 32-33
सृष्टि संवत् 1960853116	
8 एवं 15 नवम्बर 2015	
दयानन्दब्द 189	
वार्षिक : 100 रू.	
आजीवन : 1000 रू.	
दूरभाष : 2292926, 5062726	

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालन्धर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

आर्य मर्यादा साप्ताहिक का ऋषि निर्वाण एवं दीपावली विशेषांक

आर्य समाज के संस्थापक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा से पूर्व यज्ञशाला में यज्ञ में आहूतियां प्रदान करते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज, सभा कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा, सभा उप प्रधान चौधरी ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल एवं अन्य।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा से पूर्व यज्ञशाला में यज्ञ करते हुये श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, श्री विनोद भारद्वाज जी अधिष्ठाता साहित्य विभाग, श्री शादी लाल जी महेन्द्रु, श्री विजय सरीन जी, श्री साथी विजय कुमार, श्री मनोहर लाल जी आर्य, सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, श्री देशबन्धु जी चोपड़ा एवं अन्य।

सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर में अन्तरंग सभा की बैठक की अध्यक्षता करते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं उनके साथ बैठे हैं सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी एवं श्री सरदारी लाल जी उप प्रधान। एवं दूसरे चित्र में अन्तरंग सभा के सदस्य बैठक में हिस्सा लेते हुये।

वेद की ज्योति से अज्ञान रूपी अन्धकार का नाश

ले०—श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। यह आर्य समाज का तीसरा नियम है। इस नियम के निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज जीवन भर वेद सूर्य से प्रकाश प्राप्त करते रहे और उसी पावन प्रकाश से मानव मात्र को मार्ग दिखाते रहे। महर्षि दयानन्द के जीवन से अनगिनत मानवों ने वेद प्रकाश प्राप्त कर अपने जीवन के अज्ञान जनित कालिमा को दूर किया और अपने जीवन को सफल बनाया।

वेद अर्थ प्रायः ज्ञान के अर्थ में ही प्रयुक्त किया जाता है, परन्तु महर्षि पाणिनी जी महाराज इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार से भी करते हैं- विद् ज्ञाने, विद् विचारणे, विद् लाभे, विद् सत्तायाम्। जब तक मनुष्य ज्ञान-निर्भ्रान्त ज्ञान को प्राप्त नहीं करता और उसी के अनुसार विचार सागर में डुबकी नहीं लगाता तब तक न तो उसे वास्तविक लाभ अर्थात् आत्मानन्द की प्राप्ति हो सकती है और न ही उसकी सत्ता ही टिकाऊ रूप धारण कर सकती है। सत्ता सत्य के आधार पर ही बनती-ठहरती है और सत्य जब तक ज्ञान का साथी न हो व्यवहारिक जगत में सफलता को प्राप्त नहीं कर सकता। संसार में उसी की सत्ता अक्षुण्ण बनी हुई है जिन्होंने सत्य और ज्ञान को जीवन में समन्वयात्मक रूप से घटा कर अपने आप को संसार के समक्ष प्रस्तुत किया था। अन्य प्राणी तो कीड़े-मकौड़ों की तरह संसार में जन्म लेते और मर जाते हैं। उनका नाम उनके परिवार वाले ही भूल जाया करते हैं।

महर्षि दयानन्द जी के जीवन में भी सत्य और ज्ञान यही दो आधार थे। इन दोनों की प्राप्ति वेद के आधार पर ही होती है। परन्तु आज हम वेद की ओर ध्यान देना, उसका विचार करना उचित नहीं समझ रहे हैं। वेद को छोड़ कर किया गया श्रम विफल ही होता है। सूर्य के उदय होते ही जैसे अन्धकार भाग जाता है, प्रकाश फैल जाता है उसी प्रकार जनमानस का अन्धकार वेद रूपी सूर्य के जीवन में उदय हुए बिना दूर नहीं हो सकेगा। महर्षि दयानन्द ने इसी तथ्य को आर्य समाज के तीसरे नियम में सामने रखा है। हमारा कर्त्तव्य बनता था कि हम महर्षि के आदेश को शिरोधार्य करके वेद से अपना और सारे संसार का कल्याण करते परन्तु हम अपने इस मार्ग से भटक गए। परिणास्वरूप आज हम स्वयं मार्ग की खोज करने में लगे हुए हैं और हमें मार्ग मिलने में नहीं आ रहा है। प्रकाश के होते हुए जो नेत्र मूंद लेते है उन्हें अन्धकार में ठोकरें खानी पड़ती हैं। आज मानव भटक रहा है। मानवता कराह रही है। दानवता का बोलबाला हो रहा है परन्तु हम चुपचाप बैठे हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने हमें जो मार्ग दिखाया था, जिस मार्ग पर चलकर हम अपनी और संसार की चतुर्दिक उन्नति कर सकते थे। उस कल्याणकारी मार्ग को भूल कर हम अपना रास्ता भटक गए हैं। जिसके परिणामस्वरूप आज समाज में फिर से अनेक कुरीतियां और बुराईयां फैल रही हैं। अगर हम संसार का कल्याण करना चाहते हैं तो हमें वेद रूपी ज्ञान की ज्योति से हर घर को प्रकाशित करना होगा। हर घर में वेद का प्रकाश होने से ही बुराईयों का नाश हो सकता है।

दीपावली के पावन पर्व पर हम प्रकाश करने के लिए दीपक जलाते हैं। दीपक की रोशनी से अपने-अपने घरों को जगमगाते हैं परन्तु यह बाहरी प्रकाश तो कुछ समय के लिए है। कुछ समय बाद वो दीपक बुझ जाते हैं और फिर अन्धकार आ जाता है। बाहर का प्रकाश क्षणिक प्रकाश है परन्तु आन्तरिक प्रकाश जीवन भर के लिए है। जिसके हृदय में एक बार ज्ञान की ज्योति प्रज्जवलित हो गई उसे कभी नहीं बुझाया जा सकता। उस ज्ञान के प्रकाश से सारे अन्धकार, मिट जाते हैं, सभी बुराईयों का अन्त हो जाता है, सभी कुरीतियां समाप्त हो जाती हैं। इसलिए हमें बाहरी प्रकाश से ज्यादा अपने अन्दर के प्रकाश को महत्व देना चाहिए। दीपावली का पर्व हर वर्ष प्रेरणा देता है कि हम अपने अन्दर ज्ञान का दीपक जलाएं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने इसीलिए वेद का पढ़ना-पढ़ना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म बताया है। इस परम धर्म का पालन करते हुए हम सभी महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस पर यह संकल्प लें कि हम स्वयं महर्षि दयानन्द द्वारा बताए मार्ग पर चलते हुए, अपने-अपने घरों में वेद की ज्योति को प्रकाशित करते हुए सम्पूर्ण संसार को वेद ज्ञान की ज्योति से प्रकाशित करेंगे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के ऋण से उऋण होने का यही एकमात्र साधन है। महर्षि दयानन्द जी के निर्वाण दिवस पर अगर हम उन्हें अपनी सच्ची श्रद्धाजंलि भेंट करना चाहते हैं तो हमें वेदों के प्रचार का संकल्प करना होगा। घर-घर में वेद का पवित्र प्रकाश फैलाने के लिए अपने-अपने जीवन का दीप जलाते हुए संसार पर छा जाएं। सभी आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि वर्तमान समय में आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए हम वेद की शरण लें। वेद के प्रचार-प्रसार को अपने जीवन का ध्येय बनाएं। वेद रूपी ज्ञान के प्रकाश से संसार में फैल रहे गुरूडमवाद, पाखण्ड, अन्धविश्वास को मिटाएं और लोगों को सन्मार्ग दिखाएं। यही संकल्प हम दीपावली और महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस पर लें।

महर्षि दयानन्द के चरणों में श्रद्धांजलि

ले०—श्री प्रेम भारद्वाज महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी 11 नवम्बर को आर्य जनता महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 132 वां निर्वाण दिवस मनाने जा रही है। यह दिन आर्य समाज के कार्यों का विश्लेषण का दिन है। जिस महान् लक्ष्य की पूर्ति के लिए महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की थी वह कहां तक पूर्ण हुआ है? महर्षि दयानन्द के आदर्शों को अपने जीवन में कहां तक स्थान दिया है? वर्तमान में हमारे सामने कौन-कौन सी समस्याएं हैं और उन समस्याओं को दूर करने के लिए क्या-क्या कार्य करने हैं। महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस पर उन्हें अपनी श्रद्धाजंलि भेंट करते हुए हमें इन बातों पर विचार करना है। आर्य समाज के नियमों से, ऋषि जीवन अर्थात् महापुरूष के अपने आचरण, उनके रचे सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि के आन्तरिक भावों और जीवन उद्देश्यों का संकेत मिलता है। महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में जो-जो कार्य किए हैं उनका अवलोकन करते हुए चिन्तन करें कि क्या हम महर्षि दयानन्द के अनुसार आर्य समाज का कार्य कर रहे हैं या फिर अपने मूल उद्देश्य से भटक गए हैं।

ऋषि दयानन्द स्वदेश और संसार से नास्तिकवाद, अद्वैतवाद, बहु ईश्वरवाद, मनुष्य पूजा, मूर्ति पूजा आदि को समाप्त कर एक निराकार परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना, उपासना और भक्ति योग द्वारा उसका सामीप्य प्राप्त करते हुए उसकी करूणा और आत्म पुरूषार्थ से धर्म, अर्थ, काम की सिद्धि के साथ-साथ जन्म मरण के बन्धन से मोक्ष प्राप्त करने को मनुष्य जीवन का लक्ष्य मानते थे। ऋषि दयानन्द अपने और पराए के पक्षपात रहित सत्य और न्याय तथा धर्मानुसार प्रीतिपूर्वक यथायोग्य व्यवहार के आधार पर मनुष्यपन धर्म के प्रचारक थे। वे योग्यता और गुणों की पूजा के भारी समर्थक थे। ऋषि दयानन्द वेद को सब सत्य विद्याओं का ग्रन्थ मानकर उसे आदि सृष्टि में मनुष्यों के जीवन यापन और निर्देश के लिए पूर्ण विद्या का भण्डार स्वीकार करते थे। महर्षि दयानन्द बाहरी चिह्नों को धर्म का स्वरूप नहीं मानते थे। वे रूढ़िवादी भी नहीं थे और अपनी विचारधारा को बलपूर्वक दूसरों पर थोपने के भी पक्षपाती नहीं थे, अपने मत पर दुराग्रह भी नहीं करते थे। इसी कारण सर्वप्रथम भारतीय स्वराज्य का नारा लगाया था। बुद्धिवाद के परम पोषक महर्षि दयानन्द सबको विचारों की स्वतन्त्रता प्रदान करते थे। इसीलिए आर्य समाज के छठे चौथे नियम में लिखते हैं कि सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

महर्षि दयानन्द का मानवधर्म राष्ट्रधर्म के विपरीत नहीं था।'उनकी राष्ट्रीयता द्वीप-द्वीपान्तरों में लोक सेवा के उसके प्रचार में बाधक नहीं थी। महर्षि का राष्ट्रधर्म देशों की भौगोलिक सीमाओं के बन्धन से स्वतन्त्र, परस्पर ईर्ष्या द्वेष से रहित, वेद में वर्णित गुण, कर्म, स्वभाव के भेद से आर्य और अनार्य तथा श्रीकृष्ण जी की गीता के अनुसार साधु और दुष्कृत के भेद पर आश्रित था। वे वर्ण, जात-पात, रंग-नस्ल, धर्म, जन्म, देश, भाषा, प्रान्त व मत मतान्तर के आधार पर मनुष्यों में भेद भावना का परम विरोधी थे। आर्य समाज उन्हीं के सर्वसम्मत सिद्धान्तों पर राष्ट्रीय संगठन की प्रचारक संस्था है। लोकोपकार के पुतले महर्षि दयानन्द सबके भले में अपना भला स्वीकार करते थे। इसीलिए आर्य समाज के नौवें नियम में लिखते हैं कि प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। ऋषि दयानन्द अविद्या, अज्ञान, अन्धविश्वास के परम शत्रु, संसार में शुद्ध ज्ञान, विज्ञान, विद्या की वृद्धि में प्रसन्नता मानते थे। पाखण्ड खण्ड़िनी पताका को उठाने वाले दयानन्द गुरू दम्भ, सम्मोहन, उच्चाटण, वशीकरण आदि तन्त्र मन्त्रों के भ्रमजाल को तोड़कर सत्य ज्ञान के प्रकाशक थे। वे आर्य संस्कृति की विशुद्ध परम्पराओं को मान्यता देते हुए राष्ट्र का निर्माण करना चाहते थे। मानव धर्म प्रचारक, भारत दुर्दशा को दूर करने वाले, स्वराज्य का उद्घोष देने वाले महान् राष्ट्र निर्माता और समाज सुधारक दयानन्द देश की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक, आत्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक सब प्रकार की बहुमुखी उन्नति के विकास के लिए प्रयत्नशील थे। पांव की जुत्ती समझी जाने वाली और विद्या अधिकार से वंचित , शूद्रवत् बहिष्कार की गई मातृशक्ति की प्रतीक नारी जाति के परम उद्धारक थे। महर्षि दयानन्द वर्ण व्यवस्था के आधार अपने समाज की रचना देखना चाहते थे। वह देश में शूद्रों की कम से कम संख्या देखना चाहते थे। वह ब्रह्म, क्षत्र और धन व श्रम के परस्पर सहयोग से देश से अज्ञान, अन्याय अभाव और आलस्य प्रमाद को दूर करते हुए समाज का संगठन और सुधार करना चाहते थे। वे सत्य के आधार पर समन्वय सांमजस्य के प्रवर्त्तक थे। आर्य बन्धुओं महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस पर हम विचार करें कि महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में समाज कल्याण के जो कार्य किए हैं उन कार्यों को हमने कितना आगे बढ़ाया है। महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस आत्म अवलोकन करने का समय है, चिन्तन करने का समय है, महर्षि दयानन्द के कार्यों को मूर्तरूप देने का समय है। इसलिए महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस पर और दीपावली के पावन अवसर पर महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलि देते हुए उनके कार्यों को आगे बढ़ाएं। आर्य समाज को एक नई दिशा देने के लिए कार्य करें। वेद रूपी ज्ञान की ज्योति से समाज में फैल रही कुरीतियों का, अज्ञान रूपी अन्धकार का नाश करें। यही महर्षि दयानन्द के चरणों में सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

मानव मात्र के सच्चे मार्गदर्शक-महर्षि दयानन्द

ले०—श्री सुधीर शर्मा, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आत्म उन्नति और मानव मात्र के उत्थान के लिए आप्त पुरूषों के जीवन सदा ज्योति स्तम्भ का काम किया करते हैं। इस संसार में जब मनुष्य सन्मार्ग से भटक जाता है और पाप-ताप के भयानक गढ़ों में गिर कर महाकष्ट से बिलबिलाने लगता है तो यही ज्योति उसे सत्पथ की खोज में सहायता देती है। महापुरूषों का कार्य चिरस्थाई नहीं हो सकता यदि उसको उनके जीवन के साथ ही समाप्त होने दिया जाए और उसे इस योग्य बनाया जाए कि आने वाली पीढ़ियां उसका स्मरण करके लाभ उठा सकें। यही कारण है कि साहित्य में महापुरूषों के जीवन चरित्र को एक विशेष स्थान प्राप्त है।

महर्षि दयानन्द एक सच्चा मार्गदर्शन देने वाले महापुरूष थे। उनका जीवन हमारे सामने दो पक्ष प्रस्तुत करता है। एक ओर वे जगद् गुरू हैं और दूसरी ओर जननी जन्मभूमि के कट्टर भक्त। जगद्गुरू के रूप में उनकी शिक्षा और उनका परिश्रम सारे जगत् के कल्याण के लिए था। वे मनुष्य मात्र ही नहीं बल्कि प्राणीमात्र का भला चाहते थे। इस दृष्टि से सारे विश्व के बन्धु थे। स्वदेश और विदेश उनकी दृष्टि में समान था। भारतवासियों के मिथ्या विश्वास और अविद्या अन्धकार को देखकर उनका हृदय जितना व्याकुल होता था उतना ही अन्य देशवासियों के भ्रम-भूतों को देखकर भी व्याकुल होता था। इसलिए आत्मिक सद्वैद्य बनकर जहां उन्होंने ईसाईयत और इस्लाम के मतों का खण्डन किया वहीं पर उन्होंने पौराणिकों के अन्धविश्वासों को भी दूर करने के लिए प्रयास किया। जिस प्रकार एक डॉक्टर की चीरफाड़ रोगी को कष्टदायक होने पर भी उसे स्वस्थ बनाने के लिए की जाती है, इसी प्रकार इन मतवादियों का खण्ड़न भी वास्तव में उनका महाकल्याण ही था। ऋषिवर मनुष्य मात्र को मनुष्य पूजा, मूर्ति पूजा और नाना प्रकार की भ्रममूलक अविद्याजन्य बातों से निकाल कर एक ईश्वर के उपासक और एक ही सत्य सनातन धर्म के अनुयायी बनाना चाहते थे। वे संसार में स्वतन्त्रता के अग्रदूत थे और सब प्रकार की परतन्त्रता की बेड़ियों को काट कर मनुष्य समाज को स्वतन्त्रता के वायुमंडल में ले जाना ही उनका मिशन था। वह वेदों को आर्यावर्त में पैदा होने वालों के लिए ही नहीं अपितु वेदों के पढ़ने का अधिकार संसार के प्रत्येक नर नारी तक के लिए सिद्ध करते थे। विधवाओं, अनाथों, अछूतों और गौ आदि मूक पशुओं की दुर्दशा को देखकर उनके हृदय में एक टीस सी उठती थी। इसलिए उन्होंने इनके दु:खों को दूर करने का भारी यत्न किया था।

सबसे बड़ा उपकार उन्होंने यह किया कि संसार को वेद का पता दिया। वेद का महत्व क्या है? इसका अनुमान हम नहीं लगा सकते परन्तु विद्वान लगा सकते हैं। प्रोफेसर मैक्समूलर अपनी एक पुस्तक में प्रश्न उठाता है और उसका उत्तर स्वयं देते हुए कहता है कि यदि मुझसे पूछा जाए कि उन्नीसवीं शताब्दी का सबसे बड़ा आविष्कार क्या है तो मेरे विचार से इस शती का सबसे बड़ा आविष्कार वेद हैं क्योंकि इससे संसार के इतिहास को पूर्ण करने में सहायता मिलती है। ऋषि दयानन्द ने न केवल हमें वेद का ज्ञान कराया अपितु वेदार्थ का सच्चा ढंग भी बताया। उन्होंने केवल सूर्य ही नहीं दर्शाया बल्कि दूरबीन यन्त्र भी दिया जिसे नेत्रों पर चढ़कर सूर्य के सौन्दर्य को देख सके। ऋषि के आगमन से पूर्व वेद के मनमाने अर्थ किए जाते थे। जिन्हें पढ़-सुन कर कोई भी वेद की ओर आकृष्ट नहीं हो सकता था परन्तु जब महर्षि ने वेद का सत्यार्थ प्रकाश किया तो संसार भर के विद्वानों की आंखे खुल गई। आज संसार के सभी मतों के विद्वान वेदों के महत्व को समझने लगे हैं। इसका श्रेय दयानन्द को ही है। देशभक्त के रूप में भी स्वामी दयानन्द जी का काम अद्भुत था। उनकी देशभक्ति स्वार्थशून्य और उनके विशाल विश्व प्रेम का ही अंग थी। भारत जो कभी संसार का गुरू था उस समय दीन हीन अवस्था में था। महर्षि ने इस देश का अन्न जल खाया पिया था। इस देश के दुखों को दूर करना वे अपना विशेष कर्त्तव्य समझते थे। स्त्री शिक्षा, अछूतोद्धार, बाल विवाह की प्रथा को रोकना, ब्रह्मचर्य का सेवन, स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार, एक राष्ट्रभाषा आदि देशोन्नति के विभिन्न परन्तु अत्यावश्यक साधन महर्षि दयानन्द को ही दिखे थे।

आज ऋषि निर्वाण दिवस पर ऐसे महान् निष्पक्ष और उदार महामानव के जीवन के आदर्शों को स्मरण करने और जीवन में उतारने का दिन है। महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज के जो दस नियम बनाए हैं उन नियमों पर चलकर कोई भी देश उन्नति कर सकता है। आओ ऋषि मिशन को आगे ले जाने का संकल्प लें और अपने-अपने कार्य में जुट जाएं। यही हमारी ऋषि के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है और यही दीपावली का पर्व हमें प्रेरणा देता है कि वेद की ज्योति घर-घर में जलती रहे।

ज्ञान ज्योति का पर्व–दीपावली

ले०—श्री अशोक पुरूथी रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब

दीपावली हमारा ज्ञान की ज्योति को प्रज्वलित करने का पर्व है। यह पर्व कार्तिक वदी अमावस्या को मनाया जाता है। भारत के लोग इस अन्धकार से भरी हुई अमावस्या को प्रकाश में बदलने का भरसक प्रयास करते हैं। क्योंकि प्रकाश सभी को प्रिय है और प्रकाश में ही संसार के सभी पुण्य कार्य होते हैं। अन्धकार किसी को भी प्रिय नहीं है। तमसो मा ज्योतिर्गमय प्रभु हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो हम यह प्रार्थना करते हैं। क्योंकि सभी प्रकार के पापाचार अन्धकार में होते हैं। इसलिए इस पर्व के पीछे यही भावना काम करती है कि हम अन्धकार को कहीं न रहने दें। हमारे जीवन में कहीं पर भी अन्धकार न हो। हमारे द्वारा जीवन में किए जाने वाले कर्म भी प्रकाशमय हों। जिस प्रकार बाहर का प्रकाश अन्धकार को दूर करता है, उसी प्रकार ज्ञान का प्रकाश हमारे अन्दर के अज्ञानरूपी अन्धकार को दूर करता है। अन्धकार न हमारे मनों में रहे और न हमारे जीवन में रहे, न हमारे परिवार में रहे, न हमारे घर में रहे और न हमारे देश में रहे।

दीपावली के इस पावन पर्व पर हम आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को याद करते हैं क्योंकि इसी ज्योति पर्व पर उन्होंने अपना भौतिक शरीर छोड़ा था। यह ठीक है कि सन् १८८३ को दीपावली के दिन वे इस संसार से विदा हुए थे परन्तु उनका जो ज्ञान का दीपक जलाया हुआ था वह उसके बाद भी जलता रहा और आज भी सारे संसार को आलोकित कर रहा है। उन्होंने जो वेद ज्ञान संसार को दिया था वह अब सभी स्थानों पर फैल रहा है।

अपनी मृत्यु से आठ वर्ष पूर्व उन्होंने आर्य समाज की स्थापना कर दी थी और उनकी मृत्यु के समय तक अनेकों बड़े बड़े नगरों में आर्य समाजों की स्थापना हो चुकी थी। जहां महर्षि की मृत्यु हुई थी वहां पर परोपकारी सभा की स्थापना उनके काल में ही शुरू हो गई थी। महर्षि दयानन्द जी चारों वेदों का भाष्य करना चाहते थे परन्तु अपने जीवन काल में यजुर्वेद का भाष्य पूरा करके ऋग्वेद के कुछ मण्डलों का भाष्य कर पाये थे और जब उन्हें पता चला कि उन्हें जगन्नाथ के द्वारा विष दे दिया गया है तो उनके मुख से शब्द निकले थे कि जगन्नाथ तू नहीं जानता कि तूने कितना बड़ा अनर्थ कार्य किया है। मेरा बहुत सा कार्य अभी अधूरा रह गया है। परन्तु फिर भी ऋषि को यह संतोष था कि जो ज्योति मैंने आर्य समाज के रूप में प्रज्वलित की है वह भारत में ही नहीं एक दिन सारे संसार में फैल जाएगी और मेरे अधूरे कार्य को आर्य समाज पूर्ण करेगा और यह सच्चाई भी है कि महर्षि के बाद चारों वेदों का भाष्य किया गया जो आज सभी स्थानों पर उपलब्ध है।

महर्षि दयानन्द योगी थे उन्होंने अपनी योगविद्या के आधार पर यह जान लिया था कि अब वह बहुत देर तक नहीं रह सकेंगे। इसलिए उन्होंने अपने निर्वाण से आठ वर्ष पूर्व आर्य समाज की स्थापना कर दी थी। ताकि उनके द्वारा आरम्भ किए किए गये कार्य निरन्तर चलते रहें। उनकी इच्छा थी कि सारे संसार में वेदों के प्रचार का कार्य, अनाथ रक्षण, अबला उद्धार, दलितोद्धार, स्त्री शिक्षा तथा लोकोपकार के कार्य निरन्तर चलते रहें। वेद ज्योति का प्रकाश घर घर पहुंचाना उनका उद्देश्य था। वेद के प्रचार प्रसार के लिए उन्होंने अपना सारा जीवन लगा दिया। उन्होंने वेद की ज्योति को सारे संसार में फैला दिया । यह प्रकाश निरन्तर बढ़ता गया इसलिए उन्होंने अपने शरीर छोड़ने का समय भी ज्योति पर्व को चुना। ताकि इस पर्व को मनाते हुए लोग ज्योति के महत्व को समझें। इसके साथ ही वे यह भी कहते थे कि मेरी मृत्यु के शोक में लोग दु:खी न हों। बल्कि इस पर्व को मनाते हुए मेरे अधूरे कार्य को पूरा करने का संकल्प लेते रहें।

आओ 11 नवम्बर को दीपावली के पर्व को मनाते हुए उस ज्योति स्तम्भ से ज्योति लेने का प्रयास करें ताकि हम महर्षि दयानन्द के मिशन को पूरा कर सकें और हम सभी मिलकर स्नेह का दीपक जलायें, श्रद्धा का दीपक जलायें, आपसी मतभेद व वैमनस्य दूर कर के आस्था व विश्वास का दीपक जलायें, अन्त:करण में ज्ञान का दीपक जलाएं, जिससे आर्य समाज की उन्नति हो। हम दूसरों के अवगुणों को न देखें। जो दूसरों के अवगुणों को देखता है वह दुरात्मा बन जाता है और जो दूसरों के सद्‌गुणों को देखता है वह धर्मात्मा बन जाता है। आओ इस ज्योति पर्व को मनाते हुए हम अपने अन्दर के बुरे विचारों को इस ज्योति में भस्म कर डालें। जिस महर्षि की दिव्य ज्योति से नास्तिक गुरूदत्त आस्तिक बन गया था उसी ज्ञान रूपी ज्योति को हृदय में धारण करते हुए हम अपने अन्दर के अन्धकार को दूर करें तभी इस ज्योति पर्व की सच्ची सार्थकता सिद्ध होगी।

महर्षि निर्वाण दिवस का सन्देश

ले०—श्री स्वतन्त्र कुमार उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

महाभारत काल के बाद भारत देश जहां कई मत-मतान्तरों में विभक्त हो गया, वहां अनेकों कुरीतियां भी देश के अन्दर फैल गई। बौद्ध और जैन मत का प्रचार हो गया। धार्मिक कुप्रथाओं में यज्ञों में पशुबलि और कभी-कभी नरबलि के प्रचार से भयानक अन्धविश्वास फैला हुआ था। सामाजिक क्षेत्र में एक ओर जहां जन्मगत वर्ण व्यवस्था से समाज के अन्दर अव्यवस्था फैली हुई थी वहीं दूसरी ओर अस्पृश्यता के रोग भयावह रूप से देश में फैल गए। इनके साथ-साथ नारी के प्रति हीन दृष्टि से निरादर की भावना ने समाज की व्यवस्थाओं को तहस-नहस कर दिया था। इन परिस्थितियों में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने संसार को सही मार्ग दिखाने का बीड़ा उठाया। शंकराचार्य और मध्य युग के नीतिकारों और इनके वचनों के एकदम विपरीत महर्षि दयानन्द नारी के विषय में सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखते हैं कि- सब स्त्री और पुरूष अर्थात् मनुष्य मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है और सब मनुष्यों के वेदादि शास्त्र पढ़ने सुनने के अधिकार का प्रमाण यजुर्वेद के 36 वें अध्याय के दूसरे मन्त्र का अर्थ लिखते हुए महर्षि लिखते हैं कि- परमेश्वर कहता है कि जैसे मैं सब मनुष्यों के लिए इस कल्याण अर्थात् संसार और मुक्ति के सुख देने हारी ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी का उपदेश करता हूं, वैसे तुम भी किया करो। इसी प्रकरण में महर्षि शूद्रों को वेदादि पढ़ने के अधिकार के सम्बन्ध में बड़े प्रबल शब्दों में कहते हैं कि- क्या परमेश्वर शूद्रों का भला नहीं करना चाहता, क्या ईश्वर पक्षपाती है कि वेदों के पढ़ने सुनने की शूद्रों के लिए निषेध और द्विजों के लिए विधि करे। जो परमेश्वर का अभिप्राय शूद्रादि को पढ़ाने और सुनाने का नहीं होता तो इनके शरीर में वाणी, कान और इन्द्रिय क्यों रचता? जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्नादि पदार्थ सबके लिए बनाए हैं वैसे ही वेद भी सबके लिए प्रकाशित किए हैं।

स्त्री को वेद तथा अन्य विद्याएं पढ़ने के अधिकारों के प्रश्न के उत्तर में महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में इमं मन्त्रं पत्नी पठेत् के प्रमाण से कहते हैं अर्थात् स्त्री यज्ञ में इस मन्त्र को पढ़े। जो वेदादि शास्त्रों को न पढ़ी हों तो वे यज्ञ में मन्त्रों का उच्चारण और संस्कृत भाषण कैसे कर सके। इस प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने नारी जाति को उनके वंचित अधिकारों को प्राप्त कराया। शूद्रों की जो बुरी अवस्था थी उस अवस्था से मुक्ति दिलाई। महर्षि ने समाज में जहां भी कोई कुरीति देखी उस कुरीति के खिलाफ डटकर आवाज उठाई। महर्षि दयानन्द ने धार्मिक कुरीतियों और रूढ़ियों से छुटकारा पाने हेतु एक ईश्वर की पूजा के प्रसार और प्रचार के लिए वैदिक धर्म के पुनरूद्धार के लिए, विदेशी सत्ता की दासता रूपी जंजीरों से मुक्ति पाने के लिए, स्वराज्य प्राप्ति की भावना को जाग्रत करने के लिए और सभी प्रकार की सामाजिक कुरीतियों जात-पात के और ऊंचनीच के भेदभाव को तिलांजलि देने के लिए, स्त्री जाति, गौवंश और अनाथों की रक्षा के लिए, हिन्दु जाति की रक्षा के लिए तथा अनेक समाज उत्थान के कार्यों के लिए आर्य समाज की स्थापना की और महर्षि ने अपने अल्प जीवनकाल में उस संस्था के माध्यम से समाज सुधार के कार्यों में एक अद्भुत क्रान्ति पैदा करके राष्ट्र के जीवन में एक नई चेतना पैदा की। जिससे समाज, राष्ट्र, देश, प्रजा और अपने अतीत के गौरव को जानकर अपने प्राचीन मूल्यों में रूचि लेने लगा। परिणाम यह हुआ कि राजनीतिक क्षेत्र में हमने महर्षि से प्रेरणा पाकर मुक्ति पाई और स्वराज्य प्राप्त किया। सब प्रकार की कुरीतियों, पाखण्ड़ों, अन्धविश्वासों, बुराईयों के खिलाफ महर्षि दयानन्द ने आवाज उठाकर समाज में एक नई क्रान्ति को जन्म दिया। महर्षि के प्रयासों के परिणामस्वरूप समाज में सती प्रथा बन्द हुई, बाल विवाह के लिए कानून बना, नारी जाति को उसके अधिकार मिल गए। महर्षि दयानन्द ने लोगों के मन-मस्तिष्क को बदल दिया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का निर्वाण दिवस सन्देश देता है कि उठो आर्यों जागो समाज में आज फिर अनेक प्रकार की कुरीतियां फैल रही हैं। धर्म के नाम पर पाखण्ड़ और अन्धविश्वास फिर से पनप रहा है। ये सभी कार्य आर्य समाज को करने हैं। महर्षि दयानन्द जी के निर्वाण दिवस पर हम सभी इन बुराईयों के ख़िलाफ लड़ने का संकल्प लें। दीपावली का पर्व हमें यही प्रेरणा देता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन रूपी दीपक से प्रकाश लेकर समाज के अन्दर वेदों का सन्देश फैलाएं। महर्षि दयानन्द का जीवन स्वयं एक दीपक के समान है जिसने अनेकों बुझे हुए दीपकों को प्रकाशित किया है। अगर हम महर्षि दयानन्द के प्रति सच्ची श्रद्धाजंलि अर्पित करना चाहते हैं तो हमें भी महर्षि के जीवन से शिक्षा लेकर आर्य समाज की उन्नति के लिए वेदों के प्रचार के लिए, समाज उत्थान के कार्यों को करना होगा। महर्षि दयानन्द के कार्यों को अपनाना और आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाजंलि है।

दीपावली पर्व एवं महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस

ले०—श्री सुरेश शास्त्री सभा कार्यालय जालन्धर

दीप प्रदीप्त करता अनेकों दीपों को,
दीपावली संदेश देती जन-जन को।
फिर मानव रहता है क्यों बुझा-बुझा,
जब मनाता प्रतिवर्ष दीवाली को।।
प्राणों का दीया बुझाकर,
तूने दीवाली का है दीप जलाया।
बलिदान देकर ऋषिवर तूने,
भारत का है भविष्य चमकाया।
जब तक चमकता नभ में सूर्य,
और सितारों की रहेगी शान।।
ऋषिवर दयानन्द तेरे नाम का,
लोग करते रहेंगे गुणगान।।

आर्य बन्धुओं! प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दीपावली का पर्व और महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस मनाया जा रहा है। हर वर्ष हम दीपावली का पर्व मनाते हैं, दीप जलाकर अन्धकार को दूर करने का प्रयास करते हैं, अन्धकार से भरी अमावस्या की रात्रि को दीपक जलाकर प्रकाश करने की भरपूर कोशिश करते हैं परन्तु क्या हम वास्तव में अन्धकार को दूर कर पाते हैं। थोड़े समय के लिए तो अन्धकार दूर हो जाता है परन्तु रात्रि बढ़ने के साथ-साथ टिमटिमाते हुए दीपकों की ज्योति बुझने लगती है और फिर अन्धकार छाने लगता है। वास्तव में हम अन्धकार को नहीं मिटा पाते। यही स्थिति हमारे जीवन की है। हम अपने जीवन को प्रकाशित करने के लिए अनेकों प्रयास करते हैं। धन-दौलत और संसारिक भौतिक पदार्थों के द्वारा हम अपने आपको सुखी करने का प्रयास करते हैं परन्तु यह प्रयास भी दीपावली के दीपकों के समान क्षणिक होता है। दीपावली के पर्व पर मनुष्य अनेकों दीपक जलाकर प्रकाश करने की भरपूर कोशिश करता है परन्तु फिर भी अन्दर से अशान्त है, दुःखी है, बेचैन है, हताश और निराश है। जब हम इसका विश्लेषण करते हैं तो ज्ञात होता है कि हमने प्रकाश के वास्तविक स्वरूप को समझा ही नहीं है। बाहर के अन्धकार को दूर करना ही हमने प्रकाश समझ लिया है। बाहर का अन्धकार दूर करना भी प्रकाश है परन्तु जब तक अपने अन्तःकरण के अन्दर ज्ञान रूपी ज्योति का प्रकाश नहीं करते तब तक हमें वास्तविक लाभ नहीं होता है। अन्तःकरण का प्रकाश न होने के कारण ही आज मनुष्य दुःखी है, हताश है। भौतिक साधनों से सम्पन्न होने पर भी अगर मनुष्य को शांति नहीं है तो इसका कारण यही है कि हमने बाहर तो प्रकाश किया है, अन्धकार को दूर करने कर प्रयास किया है परन्तु ज्ञान को प्राप्त करने का कभी प्रयास नहीं किया। मन का अन्धकार ज्ञान की ज्योति से ही दूर होगा। जिस व्यक्ति के हृदय में ज्ञान की ज्योति प्रज्ज्वलित हो जाती है उसके अन्तःकरण का अन्धकार नष्ट हो जाता है। उसे धर्म-अधर्म का, विवेक-अविवेक का, सत्य-असत्य का ज्ञान हो जाता है। ऐसा व्यक्ति दुःखों से छूटकर सुख एवं शान्ति को प्राप्त करता है। यही दीपावली का पर्व हमें प्रेरणा देता है। तमसो मा ज्योतिर्गमय अर्थात् अज्ञानरूपी अन्धकार से ज्ञानरूपी प्रकाश की ओर जाना ही मनुष्य जीवन का वास्तविक उद्देश्य है।

दीपावली का पावन पर्व आर्य समाज के अनुयायियों के लिए और भी प्रेरणादायक बन जाता है क्योंकि इसी दिन आर्य समाज के संस्थापक और वेद रूपी ज्ञान की ज्योति के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द जी का निर्वाण हुआ था। जिस ज्ञान ज्योति की मनुष्य को आवश्यकता थी, जिसके द्वारा उसके जीवन का उद्धार हो सकता है। उस ज्योति को महर्षि दयानन्द जी ने वेद के रूप में प्रदान किया। उन्होंने बताया कि वेद द्वारा बताए मार्ग पर चलकर ही मनुष्य का उद्धार हो सकता है। अन्धकार में भटके हुए लोगों को महर्षि दयानन्द से सच्चा मार्ग दिखाया था। अपने जीवन के अन्तिम समय में भी उनकी जीवन ज्योति ने नास्तिक गुरूदत्त को आस्तिक बना दिया था। वही गुरूदत्त महर्षि दयानन्द का दीवाना बनकर आर्य समाज के दस नियमों में से पांच नियम आगे और पांच नियम पीछे लगाकर आर्य समाज का कार्य करने के लिए जी-जान से लग गए और 26 वर्ष की अल्पायु में आर्य समाज का कार्य करते हुए इस संसार से विदा हो गए। महापुरूषों का जीवन हमारे जीवन में प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता है। महर्षि दयानन्द जी का जीवन भी हमारे लिए प्रकाश स्तम्भ है। **(शेष पृष्ठ 8 पर)**

महर्षि दयानन्द जी ऋत सत्य ज्ञान दीप से करोड़ों दीप जला गये

ले०—श्री (प. उम्मेदसिंह विशारद) वैदिक प्रचारक गढ़ निवास मोहकमपुर (देहरादून)

जब-जब सृष्टि में ईश्वरीय वाणी वेदज्ञान के अभाव से संकट उत्पन्न होता है तब-तब मोक्ष से लौटकर महापुरूष का जन्म होता है। ऐसे व्यक्ति विश्वात्मा के वाहन होते हैं किन्तु वे परमात्मा के अवतार नहीं होते, परन्तु उनमें विषम परिस्थियों को मिटा देने के लिए शक्ति का संचार हो जाता है। अठारहवी व उन्नीसवी शदी में भारत की विषम परिस्थितियों को चुनौती के रूप में ऋषि दयानन्द जी ने स्वीकार किया।

प्रथम घटना—ऋषि दयानन्द जी के जीवन में महाशिवरात्री के पर्व पर रात भर जागकर शिव जी के मन्दिर में मूर्ति के सामने बैठकर उनके दर्शन की प्रबल इच्छा से सारी रात काट दी शिवा जी के दर्शन तो क्या होने थे, मन्दिर में सन्नाटा देखकर चूहे बिलों से निकल आये और मूर्ति पर चढ़े प्रसाद को खाने लगे, और उछल कूद करने लगे। यह सब देखकर मूलशंकर (बचपन का नाम) के हृदय में जिज्ञासा उत्पन्न हुई ये कैसा देवता है जो चूहों से भी अपनी रक्षा नहीं कर सकते है। इस समस्या का समाधान कोई नहीं कर सका यही कारण है कि अपने कार्यकाल में दयानन्द जी ने मूर्ति पूजा का जबर्दस्त खण्डन किया और रूढ़िवादिता के घोर शत्रु हो गये। यही घटना विश्व का कल्याण कर गई।

द्वितीय घटना—दीपावली के महापर्व पर इस नश्वर संसार से विदा लेते समय अन्तिम बार कहा कि हे ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो, तूने अच्छी लीला की! वाह क्या बात है किसी से न गिला न शिकवा अपितु अपने प्रभु द्वारा जो संसार चक्र चल रहा है और जो जीवों का कल्याण हो रहा है उस ईश्वर इच्छा का स्मरण करते हुए अन्तिम विदा ली। और उस दीपावली में एक ज्ञान दीप से करोड़ों दीप जला गये।

विलक्षण प्रतिभाशाली ऋषि दयानन्द—महर्षि दयानन्द सच्चे ईश्वर भक्त थे, और इतना बड़ा आत्मबल था कि सदैव सत्य प्रकट करने में अग्रणी रहते थे। वे जानते थे जब तक असत्य का खण्डन नहीं किया जायेगा, तब तक सत्य का मण्डन नहीं होगा। यही कारण है एक तरफ दयानन्द थे और दूसरी ओर सारा जमाना था। उन्होंने समाज में तमाम बुराईयों को सुधारने के चैलेन्ज को स्वीकार किया। और जमाने की गर्दन पकड़कर अपनी ओर चलाया। आज संसार में जो तमाम सुधारवादी विचार दिख रहे हैं वह सब ऋषि दयानन्द जी की देन है।

आज करोडों आर्य भी असत्य खण्डन में असमर्थ है—महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज खोलकर सदैव के लिए सत्य का मंडन और असत्य का खण्डन करने के लिए आर्यो को एक मंच दिया है। और इंदनमम का पाठ पढ़ाया था, परन्तु आज हम मम-मम का पाठ तो पढ़ रहे हैं। इदं न मम को एक किनारे रख दिया है। आज अधिकांश आर्यों के परिवार से लेकर चारों ओर समाज में कदम-कदम पर धार्मिक, सामाजिक अन्ध विश्वास परोसा जा रहा है और हम असहाय मूक बनकर देख रहे हैं। हम महर्षि की आज्ञा की अवज्ञा व वैदिक सिद्धान्तों से समझौता करते जा रहे है। यदि आर्य जगत समाज की एक-एक बुराई को लेकर क्रमशः आन्दोलित, सामूहिक रूप से एक स्वर में हो जाये तो समाज में व्यापक प्रभाव पड़ सकता है। हम आर्यो का कार्य केवल आर्य समाज भवनों की रक्षा करना ही नहीं हैं अपितु बाहर भी निकलना पड़ेगा।

महर्षि ने ज्ञान दीप द्वारा तमाम अन्धविश्वासों से सजग कराया—स्वामी विरजानन्द जी द्वारा तीन वर्षों में आर्ष, अनार्ष साहित्य का ज्ञान प्राप्त करके रण क्षेत्र में उत्तर पड़े। ऋषि दयानन्द समझते थे कि हिन्दू समाज का सम्पूर्ण ढाँचा बिगड़ा हुआ है। वेदों और उपनिषदों के अर्थ का अनर्थ करके और पुराणों के कल्पित कथाओं व साहित्य से चारों ओर अन्धविश्वास फैल गया है। इसीलिए उन्होंने सबसे पहला प्रहार वेदों के अर्थों पर किया और सायणाचार्य, महीधर, मेक्समूलर आदि ने जो वेदों के अर्थ किये थे उन्हें नकार दिया क्योंकि वे इतिहासपरक अर्थ थे

महर्षि जी ने ईश्वर परक अर्थ करके वेदों का सत्य स्वरूप सामने रखा। एक नई हलचल मचा दी। धर्म के ठेकेदारों की चूलें हिला दी।

सम्पूर्ण भारतवासी पाँच हजार साल से चली आ रही धार्मिक विचार धाराओं से बंधे हुए थे भारतीयों को सत्य विचारधारा ने अत्यन्त प्रभावित किया। और आश्चर्य चकित थे कि एक देवदूत अकेला सम्पूर्ण, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक कुरूतियों पर कैसे निर्भिकता से प्रहार कर रहा है। एक नया आन्दोलन खड़ा हो गया।

महर्षि दयानन्द जी ने वेदों के रूढ़ी अर्थों को बदल दिया, तथा धार्मिक क्षेत्र में रूढ़ीवाद पर प्रहार, राजनैतिक क्षेत्र में रूढ़ीवाद पर प्रहार सामाजिक क्षेत्र में रूढ़ी वाद पर प्रहार तथा वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था, अन्ध पूजा पद्धति पर प्रहार तथा भारतवर्ष मुसलमानों व अंग्रेजों का गुलाम था, उससे मुक्ति हेतु स्वराज्य शब्द का दीप जलाया, स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ाया.

महर्षि दयानन्द जी सदैव के लिये आर्ष साहित्य रचकर ज्ञान दीप जला गये–महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेवादि भाष्य भूमिका, व वेदों का आर्ष भाष्य व जीवन निर्माण के सोलह संस्कारों के लिये संस्कार विधि तथा पंच यज्ञ महाविधि, गौकरूणा निधि, व्यवहार भानु व अन्य साहित्य रचकर और इनका निरन्तर प्रचार-प्रसार हेतु आर्य समाज का संगठन बना कर गये। आर्यों के लिये इन सभी को मार्ग निर्देशिका बना गये।

आर्यो का अतीत, वर्तमान व भविष्य–महर्षि दयान्द जी के दिवगंत के अर्ध शताब्दी तक आर्यों का त्याग का स्वर्ण युग था, वर्तमान में आन्दोलन, तथा असत्य का खण्डन, व आर्या नेतृत्व द्वारा कुरूतियों पर प्रहार एक स्वप्न रह गया है और सनातनी भद्र मूर्तियों की पूजा करते है, और आर्य समाजी मन्दिरों में यज्ञ करके ईश्वर को याद करते है। जो आर्य समाज का आन्दोलन था वह अतीत होता जा रहा है। नई पीढ़ी कल का आर्य समाज दिशाहीन है। उनको विरासत में आर्यसमाज मन्दिरों की रक्षा व रविवार को केवल 2 घण्टे यज्ञ व सत्संग के संस्कार मिल रहे है। इसलिये जो वर्तमान में आर्य जगत में हो रहा है, भंविष्य में वही होगा इसको नकार नहीं सकते हैं। आर्यो हमें आर्य समाज की दशा और दिशा पर चिन्तन करना ही पड़ेगा।

पृष्ठ 6 का शेष-दीपावली पर्व एवं.....

आर्य बन्धुओं यह समय चिन्तन करने का समय है, आर्य समाज के कार्यों को नई दिशा देने का समय है। महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार करने का समय है। केवल महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस मनाकर ही अपने दायित्व से मुक्त नहीं होना है अपितु महर्षि दयानन्द के संदेश को घर-घर पहुंचाने का संकल्प लेना है। दीपावली का पर्व हमें प्रेरणा देता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जो वेद रूपी ज्ञान की ज्योति जलाई थी उस ज्ञान की ज्योति को हमेशा जलाए रखे। वेद रूपी ज्ञान की ज्योति कभी बुझनी नहीं चाहिए। आज का मानव ज्ञान रूपी ज्योति के अभाव में ही अन्धकार में भटक रहा है। अगर हम महर्षि दयानन्द का सन्देश घर-घर पहुंचाकर वेद ज्ञान को फैलाने का कार्य करते हैं तो भटके हुए लोगों को सही मार्ग मिलेगा। महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस हर वर्ष हमें यही प्रेरणा देता है कि हम बाहर की ज्योति के साथ-साथ अन्दर की ज्योति को भी जलाएं। बाहर के प्रकाश के बिना हमारा जीवन चल सकता है परन्तु जिसके अन्दर ज्ञान रूपी प्रकाश नहीं है वह फिर मनुष्य नहीं रह जाता है। मनुष्य की परिभाषा है मत्वा कर्माणि सीव्यति अर्थात् जो सोच विचार कर कार्य करता है वही मनुष्य कहलाने का अधिकारी है। बिना ज्ञान के व्यक्ति सोच विचार नहीं कर सकता और बिना ज्ञान के किया गया कर्म श्रेष्ठ नहीं होता। इसीलिए दीपावली का पर्व चिन्तन और मनन का पर्व है। यह पर्व हमें आत्मावलोकन की प्रेरणा देता है। अपने-अपने घरों में दीपक प्रज्जवलित करते हुए हम अवश्य चिन्तन करें कि कहीं हमारे जीवन में तो अन्धकार नहीं है और अगर कहीं पर है तो महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा दिए गए वेद ज्ञान रूपी प्रकाश से उस अन्धकार को भी मिटाएं।

खोलो सभी द्वार वेद प्रचार मार्ग के,
कहा महर्षि ने अन्तिम सन्देश देने को।
सोचो आर्यो मिलकर विचारो,
महर्षि के उस सन्देश दीपावली को।।
तुम्हारा ऋण हम भारतवासी,
ऋषिवर कैसे चुका पाएंगे।
जले दीवाली पर लाखों दीप भले ही,
पर हम तो वेद ज्ञान का दीपक जलाएंगे।।

मातृ भूमि का वैदिक गीत

लेo—श्री डा. सुशील वर्मा फाजिलका (पजांब)

सारे विश्व को ज्ञान से प्रकाशित करने का श्रेय जिस भूमि को है वह है भारतवर्ष। परमात्मा की अनुकम्पा से सृष्टि के प्रारम्भ में हमें ऋषियों के माध्यम से वेदों का ज्ञान प्राप्त हुआ। वेद स्वत: प्रमाण होते हुए मनुष्य मात्र के लिए ज्ञान की ज्योति को गुरु शिष्य परम्परा द्वारा प्रज्जवलित एवं प्रसारित किया। वेद ज्ञान का भण्डार है ''सर्व ज्ञानमयो हि स:'' (मनु) जहां वेदों ने हमें जीवन पद्धति का मार्ग दर्शाया वहीं हमें ज्ञान, कर्म एवं उपासना का परिपूर्ण भण्डार प्रदत्त किया। विश्व के किसी ग्रंथ में भी ऐसी परिपूर्णता नहीं जैसी वैदिक परम्परा में है। फिर चाहे सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, भूगौलिक, राजनैतिक अथवा कोई भी क्षेत्र क्यों न हो, सभी धाराएँ उत्कृष्ट, सम्पन्न एवं सम रूप में प्रवाहित होती प्रतीत होती है। परिवार, व्यक्तिक, समाज, राष्ट्र एवं समष्टि के प्रति उदात्त भावनाओं का सन्देश नैसर्गिक रूप में उपस्थित होता दृष्टिगोचर होता है। ''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादापि गरीयसि'' (बा.रा.) जैसे भाव ऐसे ही तो नहीं प्रकट हो गए। यह सब हमारी वैदिक संस्कृति एवं परम्पराओं का परिणाम है। यह विश्ववारा संस्कृति आज से नहीं अपितु प्रारम्भिक काल से ही हमें सुसस्ंकृत करती चली आ रही है।

इड़ा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुव:। बर्हि सीदन्तवसिध:।। **ऋग् 1/13/9**

स्तुति योग्य, प्रंशसनीय संस्कृति, वाणी, मातृभाषा एवम पूजा-योग्य मातृभूमि, हिंसा रहित, कभी न हानि पहुँचाने वाली सुख समृद्धि देने वाली, दिव्य गुणों से युक्त ये तीनों देवियां घर घर को प्रकाशित करें। ऐसी रही है हमारी प्रचलित एवं पल्लवित संस्कृति जिसे वैदिक संस्कृति से सम्बोधन किया जाता रहा है। यही है विश्व के स्वीकार करने योग्य एवं सुख शान्ति व समृद्धि प्रदान करने वाली संस्कृति ''सा प्रथम संस्कृति'' विश्वास संस्कृति राष्ट्र और जाति का आत्मा है। आत्मिक उत्थान का प्रतीक है संस्कृति। शारीरिक, आत्मिक एवम बौद्धिक विकास ही संस्कृति का उद्देश्य है। यहाँ कोई छोटा बड़ा नहीं। सभी को मिल कर चलने का, मिलकर विचार विनिमय करने का आदेश दिया जाता है।

''संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम''

(ऋग् 19/112/2)

इसी शृंखला में जहाँ पारिवारिक सम्बन्ध, कर्त्तव्य एवं अनुशासन का पाठ पढ़ाया जाता है वही राजा का चयन, राजा के कर्त्तव्य, एवं प्रजा के प्रति उत्तरदायित्व भी समझाया जाता है वहीं प्रजा को भी समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य परायणता का सन्देश व आदेश भी दिया जाता रहा है। इसी भावना से ओतप्रोत है अथर्ववेद का भूमि सूक्त (12.1) जिसमें राष्ट्रीयता, एवं मातृभूमि के प्रति प्रेंम, कृतज्ञता, निष्ठा एवं कर्त्तव्य परायणता की शिक्षा दी गई है। इस सूक्त में 63 मन्त्र है जिसका पहला मन्त्र मातृभूमि की स्वाधीनता को धारण करने के लिए आठ गुण वर्णन करता है।

सत्य बृहदृतमुग्र दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञ: पृथिवी धांरयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्युरुं लोकं पृथिवी न: कृणोतु।।
अथर्व 12/1/1

अर्थात् सत्य, उद्यम, सरल निश्चल व्यवहार, वीरता नियमनिष्ठा, तप द्वन्दों की चिन्ता किए बिना कर्तव्य पालन, आस्तिकता, यज्ञ-संगतिकरण अर्थात मिलकर काम करने की भावना, ये आठ गुण मातृभूमि की स्वाधीनता को धारण करते है अर्थात सुरक्षित रखते हैं। अतीतकाल की भविष्यत रक्षा करने वाली वह मातृभूमि हमारे लिए विस्तृत क्षेत्र बनावे।

राष्ट्र भक्तों के भूति भविष्यत वर्तमान काल की नियामक देवता मातृ भूमि ही रहेगी। भूतकाल में मातृभूमि की जैसी सेवा की होगी वैसी ही उनकी वर्तमान स्थिति होगी। वर्तमान में जैसे उपासना करोगे उसी के अनुसार ही भविष्य तय होगा। राष्ट्र भक्तों में एकता की आवश्यकता होती है। सभी विविधता के बावजूद आदि माता यही मातृ भूमि है। मातृभूमि की उपासना में भाषा प्रान्त, धर्म एवं जाति का भेद कहीं भी स्वीकार्य नहीं।

जनं विभ्रती बहुधाविवाचसं नाना धर्माणं पृथिवी यथौकसम

अथर्व 12/1/45

हमारी जिस मातृभूमि के नगर देवों द्वारा बनाए गए हैं और जिसके खेतों में सब मनुष्य विविध कार्यों में कार्यरत है, सब पदार्थों को अपने गर्भ में धारण करने वाली मातृभूमि को परमेश्वर सब दिशाओं में हमारे लिए रमणीय बनावें।

यस्य: पुरो देवकृता: क्षेत्रे यस्या विकुर्वते।
प्रजापति: पृथिवी विश्व गर्भामाशामाशां रण्यां न: कृणोतु।

(अथर्व 12/1/43

प्रजा के जब विश्वास हो जाता है कि हमारे नगरों का सम्बन्ध देवों से है और उन देवों को देवत्व हमारे इन विशाल नगरों में प्रत्यक्ष देखा है तो निश्चय रूप से देश के प्रति मन में एक भाव उमड़ पड़ता है, एक जागृति आती है, उत्कृष्ठता जाग उठती है। श्री राम का सम्बन्ध, अयोध्या, रामेश्वरम् से, श्री कृष्ण का गोकुल वृदांवन और द्वारिका से, इन्द्र का इन्द्रप्रस्थ से, शिव का काशी से, सिंहगढ़ से शिवाजी का, चितौड़गढ़ उदयपुर से महाराणा प्रताप का झांसी का रानी लक्ष्मी बाई से, सुभाष चन्द्र बोस का कलकत्ता से, भगत सिंह का पंजाब से, स्वामी दयानन्द का टंकारा व अजमेर से, इसी प्रकार अन्य महापुरुषों का भिन्न-भिन्न स्थानों से। तब वे स्थान गौरव का प्रतीक बन जाते हैं, आस्था निष्ठा व त्याग के केन्द्र बन जाते है। उस मातृभूमि का नाम ही हमारे लिए प्रेरणा स्त्रोत बन जाता है। हमारी तो वह राष्ट्रभूमि है जिसने सारे विश्व को चरित्र की शिक्षा दी, राष्ट्रीयता की शिक्षा दी, जीवन के मूल्यों की पारस्परिक, पारवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय सद्भावना, सम्बन्धों व देश पर मर मिटने की परम्परा है। सबसे प्रथम संस्कृति प्रदान करने का श्रेय भारत वर्ष को ही तो है। मनु के शब्दों में

एतत् देश प्रसूतस्य सकाशाद् अग्रजान्मन:।
स्वयं स्वयं चरित्रं शिक्षरेन, पृथिव्यां सर्वमानवा:।।

(मनु स्मृति)

मातृभूमि की कल्पना सर्वप्रथम ऋषियों की है। यह इस अथर्ववेद के भूमि सूक्त से प्रमाणित है जिसे मातृभूमि का वैदिक गीत भी कहा जाता है। इसी भूमि सूक्त में कहा गया है कि हमारी जिस मातृ भूमि में हमारे प्राचीन पूर्वजों ने पराक्रम किया है, जिसमें देवों ने असुरों को भगा दिया, जो गोवें, घोड़े, पक्षियों एवं अन्य प्राणियों को स्थान देती है वह मातृ भूमि हमें ऐश्वर्य और तेज देवे।

यस्यां पूर्वे पूर्वजनां विचक्रिरे यस्या देवा असुरानभ्यवर्तयन्।

गवामश्वानां वयसश्च विष्ठा भग वर्च: पृथिवी नो दधातु।

जिस भूमि पर शरीर में यथार्थ कर्म करने वाले, ज्ञानवान, सात विषय प्राप्त करने वाले ऋषियों ने सत्पुरुषों के रक्षक यज्ञ एवं ब्रह्मचर्य तप के साथ वेद वाणियों को उत्तमता से पूजा है, ऐसी वह हमारी श्रेष्ठ मातृभूमि है।

यस्सां पूर्वे भूतकत ऋषयों गा उदानृचु:।
सत सत्रेण वेधसो यज्ञेन तपसा सह।।

अथर्व 12/1/39

जिस पर भूमि शिला पत्थर और धूलि है वह यथावत धारण की गई भूमि धरी हुई है, उस सुवर्ण आदि धन छाती में रखने वाली पृथिवी से मैंने अन्न लिया है अथवा सेवन किया है।

शिला भूमिरश्मा पासुं सा भूमि: संधृता धृता।
तस्यै हिरण्यवक्ष से पृथिवया अकरं नम:।।

अथर्व 12/1/26

इस प्रकार यह प्रमाणित हो जाता है कि मातृभूमि की कल्पना सर्वप्रथम हमारे ऋषियों मनीषियों की है और जब कृतज्ञता के भाव जागृत होते है। तब वह कह उठता है कि यह मातृभूमि जहाँ में पैदा हुआ हूँ, मैं इस पृथिवी का पुत्र हूँ।

माता भूमि: पुत्रो अहं पृथिव्या:। अथर्व 12/1/12

यह स्वाभाविक है कि मनुष्य अपनी मातृभूमि में पैदा होने वाले अनाज, फल, कन्दमूल इत्यादि का सेवन करता है और पुष्ट होता है तब अपनी मातृभूमि पर प्रेम उमड़ता है। यदि माता के प्रेम की कोई उपमा देनी होती है तो वह केवल और केवल मातृप्रेम ही हो सकता है अन्य नहीं। इसीलिए हमने माता के समान उपकार करने वालों को केवल माता का ही नाम दिया क्योंकि उससे बढ़कर कोई उपमा है ही नहीं। फिर वह चाहे गऊ माता हो, गंगा मैया हो, अथवा कल्याणकारी गायत्री।

उनके उपकारों के साथ-साथ हम प्रार्थना करते हैं कि वह भूमि (मातृभूमि) हमें तेज बल एवं उत्कृष्ट राष्ट्र का गौरव प्रदान करें।

''सा नो भूमिस्तिवषि बलं राष्ट्रे दधातूत्तमे।''

अथर्व 12/1/8

यहां शब्द 'उत्तम राष्ट्र प्रयोग किया गया है क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र भक्त की आकांक्षा होती है कि मेरा राष्ट्र सब राष्ट्रों में उत्तम हो।'

''सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा''–इकबाल।

इसके साथ यह भी प्रार्थना करते हैं क्रि दुखदायी, हिंसक, विरुद्ध चलने वाले और जो कंजूस एवं लुटेरे पुरुष हैं, हे भूमि! इन पिशाचों और सब राक्षसों, दुश्चारियों, आततायियों को हमसे अलग रख।

ये गन्धर्वा अप्सरसो ये चाराया किमीदिनः।
पिशाचन्त्सर्वा रक्षांसि तानस्माद भूमे यावय।।

अथर्व 12/1/50

अर्थात ऐसी मातृभूमि जो हमारा पालन पोषण करती है, हमें हष्ट पुष्ट बनाती है, जिसका अन्न सेवन करके हम बड़े होते हैं जो हमारे शत्रुओं से, असुरों से, लुटेरों से हमारी रक्षा करती है जो हमें बचने का गौरव प्रदान करती है ऐसी मातृभूमि के लिए हम सभी बलिदान होने के लिए सदा तत्पर रहें। राष्ट्र भक्त इसी भावना के ओत प्रोत होकर पुकार रहा है –

''वयं तुभ्यं बलिहतः स्याम''

उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्ये सन्तु पृथिवी प्रसूताः।

दीर्घ न आयुः प्रति बुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम।

अथर्व 12/1/62

अर्थात हे पृथिवी तेरी गोदी हमारे लिए नीरोग और राज रोग अथवा क्षय रोग रहित होवे। अपने आयु को दीर्घ काल तक जगाते हुए हम तेरे लिए बलिदान देने वाले बने रहें। हे मातृभूमि हम लोग तुम्हीं में से उत्पन्न हुए हैं, हम सभी नीरोग दृढांग, दीर्घायु, बुद्धिमान एवं जागृति सम्पन्न रहें। हम मातृभूमि के हित के लिए अपने तुच्छ निज स्वार्थों की बलि देने में उद्यत रहें। सब भांति तुम्हारा हित करने में तत्पर रहें। मातृभूमि के लिए हम अपने आप को आहुत करने हेतु सदा तत्पर रहें।

''अयं ते इध्म आत्मा'' इस भाव को जागृत कर कहें

''इदं राष्ट्राय स्वाहा, इदं राष्ट्राय इदं न मम''–वन्दे मातरम्।

ओ३म् बोलो

ले० श्री वीरेन्द्र-कुलदीप "साथी" जालन्धर

ओ३म बोलो–ओ३म बोलो
ईश्वर का प्यारा नाम ओ३म बोलो
ओ३म ईश्वर का निज नाम है
सबके बिगड़े बनाता काम है
नाम प्रभु जी के हैं अनेकों
ज्ञान की आंखों से गर तुम देखो। ओ३म बोलो–2....
ओ३म ही सारी सृष्टि रचाता
ओ३म ही सारी सृष्टि चलाता
सत्संग में जाकर ज्ञान बढ़ा लो
ओ३म का नाम हृदय में बसा लो। ओ३म बोलो–2.....
ओ३म सब का ही माता–पिता है
ओ३म सब का ही बन्धु सखा है
हम भूल जाते प्रभु न भूलाता
अंग–संग रहता सबके विधाता। ओ३म बोलो–2.....
ओ३म ही सबका प्राणाधार है
ओ३म ही सबका पालनहार है
मन में ज्ञान का दीपक जला लो
संध्या हवन में ध्यान लगा लो। ओ३म बोलो–2.....
सत्संग की रंगत चढ़ा ले
नर जीवन सफल बना ले
जीवन में रह जाते काम अधूरे
ओ३म कृपा बिन होते न पूरे। ओ३म बोलो–2.....
ओ३म ही करता सब पर दया है
ओ३म भी न्यायकारी बड़ा है
सुख दुख में प्यारो ओ३म ध्यालो
''साथी'' प्रभु–महिमा के गीत गा लो।
ओ३म बोलो–ओ३म बोलो
ईश्वर का प्यारा नाम ओ३म बोलो।

हमारे स्वामी महर्षि दयानन्द

ले०—श्री चमूपति एम. ए.

बड़े आदमी दो प्रकार के होते हैं। एक धन की दृष्टि से बड़े, दूसरे धर्म की दृष्टि से बड़े। जो धर्म और धन दोनों दृष्टियों से बड़े हों, उनकी बड़ाई का क्या कहना है!

गरीब का बालक परिश्रम से पढ़े, विद्वान बने, बड़ी-बड़ी डिग्रियां पाए और ऊंची पदवी पर पहुंचे। वहां योग्यता से काम करे, संसार में नाम पाए और भारत का नाम ऊंचा करे, वह बालक अच्छा है।

इससे भी अच्छा वह धनवान है, जो धन-धान्य छोड़ जंगल में जाए और तपस्या करे, विद्वानों से मिले, उनसे पढ़े, ज्ञानी बने, सच को जाने और संसार को सिखाए। ऐसा पुरुष महापुरुष है। सचमुच वह स्वामियों का स्वामी और राजाओं का महाराजा है।

ऐसे ही महापुरुष स्वामी दयानन्द जी महाराज थे।

स्वामी दयानन्द के शरीर को देखो! कैसा सुडौल और बलवान् है! छाती उभरी हुई, आंखें चमकीलीं, सिर बड़ा, टांगें कड़ी, बाजू मोटे और सख्त।

स्वामीजी की विद्या इतनी थी कि और कोई इनके बराबर न था। स्वामी जी के ग्रंथ पढ़ो, विद्या के खज़ाने हैं।

इन सब बातों से बढ़कर वे सदाचारी और सच्चे थे। बुरा कर्म भूलकर भी न करते थे। तुम इसी लेख में स्वामीजी के सदाचार के अनेक उदाहरण देखोगे।

बस! जिस पुरुष व स्त्री में ये तीन गुण हों, अर्थात् शरीर का बल, विद्या और सदाचार, वह पुरुष तथा स्त्री पूर्ण है, अन्य अधूरे हैं।

स्वामी दयानन्द जी पूर्ण पुरुष थे, तुम भी पूर्ण पुरुष बनना।

जन्म—स्वामी दयानन्द का जन्म भारत के पश्चिम में गुजरात प्रान्त के अन्तर्गत मोरवी नामक देशी रियासत के टंकारा नामक नगर में हुआ। दयानन्द के पिता कृष्णजी तिवारी बड़े जमींदार थे। सरकार की ओर से लगान (महसूल) की वसूली करते थे, जो हमारे यहां तहसीलदार करते हैं। इससे सरकार में उनका मान था। दयानन्द का जन्म नाम 'मूलशंकर' था।

शिक्षा—दयानन्द ने पहले कुछ संस्कृत पढ़ी फिर यजुर्वेद कण्ठस्थ किया।

कृष्ण जी शिव के उपासक थे और शिवपुराण की कथा सुना करते थे। वे मूलजी को भी साथ ले जाते और शिव-पूजन की महिमा बताया करते। इससे मूल-जी की शिव में बड़ी श्रद्धा हो गई।

शिवरात्रि—शिव के उपासक शिवरात्रि को पवित्र रात्रि मानते हैं। उसमें व्रत रखते हैं। रात को जागते और दिन को निराहार (भूखे) रहकर शिव का पूजन करते हैं। पंजाब प्रान्त में फाल्गुन मास की अंधेरी चौदस यह रात होती है, परन्तु गुजरात में माघ मास की अंधेरी चौदस को शिवरात्रि मानते हैं।

जब मूलशंकर की आयु (उम्र) चौदह वर्ष की हुई तो पिता ने सोचा कि अब इसे व्रत रखना चाहिए। माता ने प्यार से रोका कि बालक छोटा है, व्रत का कष्ट न उठा सकेगा। परन्तु मूलशंकर ने स्वयं व्रत रखना मान लिया और पिताजी उसे शिव-मन्दिर में साथ ले गए।

पहला व्रत था। कुछ चाह थी, कुछ अचम्भा था। मूलजी ने ठानी, सारी रात जागकर शिव को खुश करेंगे। आधी रात होते-होते सब पुजारी और उपासक सो गए। मूल के पिताजी ने भी वहीं लम्बी तान ली। अब मूल अकेला जागने लगा।

उद्धत चूहा—शिवलिंग पर मिठाई रखी थी, फल चढ़े थे, भीनी-भीनी सुगन्ध उठ रही थी। इतने में एक चूहा निकला। शिवलिंग के इधर-उधर फिरा, जैसे पुजारी परिक्रमा (फेरी) किया करता है। इधर मूल जी की भी आंख न झपकती थी। फिर-फिराकर चूहा चौकी पर चढ़ा और शिवजी से अठखेलियां करने लगा।

मूल यह देखकर हक्का-बक्का रह गया। क्या यही शिव है, जो दैत्यों को मारता है ? एक चूहा तो इससे हटाया नहीं जाता। क्या कैलाश पर रहने वाला यही महादेव है ? या इस चौकी को ही कैलाश पर्वत कहते हैं ? मैं इसके लिए क्यों जागूं ? व्रत से क्या लाभ ?

मूलशंकर के मन में इस प्रकार की शंकाओं का दरिया-सा बह गया। उसने पिताजी को जगाया और उनसे प्रश्न किए, परन्तु

सन्तोष देने वाला उत्तर न मिला। अन्त में पिताजी से पूछकर घर चले आए और कुछ खा-पीकर सो गए।

इस प्रकार कई शिवरात्रियां गुज़र गई, पर वह शिव और चूहे की पहेली किसी ने भी तो न बुझायी।

दो मौतें–कुछ समय बाद मूलशंकर के घर में दो मौतें हुई। वे सोलह वर्ष के थे कि उनकी भगिनी मर गई। सारा घर रो रहा था, पर मूल के सिर पर वह शिवरात्रि की पहेली सवार थी। वे इस सोच में थे कि 'मरना क्या होता है ?' एक आंसू भी तो आंखों से न निकला। तीन वर्ष पीछे चचा ने प्राण दिए। उनसे बहुत प्यार था। पिछली कसर भी निकाल दी। रह न सके, अब के फूट-फूटकर रोए। जी में आया, घर से निकलकर, 'मृत्यु क्या है ?' इस बात का पता लगाना चाहिए।

जंगल को–पिता को पता था कि पुत्र का मन घर से उचाट है। सोचा कि विवाह कर दो, अपने आप ही फंस जाएगा। उधर मूल को यह हठ था कि काशी भेजो, पढ़ आऊं। पिता ने पास ही के किसी गांव में पढ़ने का प्रबंध कर दिया। जब विवाह के दिन निकट आए तो मूल ने और किसी तरह छुटकारा न देख, भाग जाने की ठानी, और वह एक दिन समय पाकर भाग खड़ा हुआ।

मूलशंकर ने दो नई बातें देखी–एक तो शिवलिंग पर चूहा चढ़ा, दूसरे घर में दो मौतें हुई। इसी से आंखें खुल गई और सच की खोज में निकले।

शिक्षा–सयाने बालक बात-बात पर विचार करते हैं और सत्य को ढूंढ़ पाते हैं।

पकड़े गए–घर में कोलाहल मच गया–'मूल कहां गया ? मूल कहां गया ?' पिताजी ने खोज कराई –सब ओर सिपाही भेजे, आप भागे-दौड़े। अन्त को एक महन्त के बताने से भागे हुए बालक का पता लग गया और सिद्धपुर के मेले में मूलजी पकड़े गए। कड़ा पहरा लगाया, पर मूल के मन में वही पहली धुन थी। पहरे वालों से आंख बचाकर फिर भागे। अब के भी बहुतेरी ढूंढ़ हुई, पर मूल का पता न मिला, न मिला।

वन-पर्वत–मूलशंकर अभी नवयुवक था, फिर लड़का बड़े आदमी का! घर के बाहर कभी गया न था। निकलने को तो निकल आया। उसे क्या पता कि ज्ञान का मार्ग कठिन है। कहीं साधुओं ने लूटा, कहीं चोरों ने ठग लिया। पास पैसा न रहा। कहीं रात, कहीं दिन। जी में डर भी था कि कहीं फिर न पकड़ा जाऊं। बहुत समय तक इस तरह मारा-मारा फिरा। कहीं जंगल के पार होना पड़ा, तो कहीं पहाड़ों पर चढ़ गया। जहां किसी महात्मा का नाम सुना, इसे अपने तन को सुधि भूल गई। जिस तरह भी बन पड़ा वहां पहुंचा। इस तरह भांति-भांति की विद्या पढ़ी। योग्य विद्या की इन्हें विशेष धुन रही। एक दक्षिणी स्वामी से संन्यास लिया तब से इनका नाम दयानन्द हुआ। आगे हम स्वामी जी का इसी नाम से वर्णन करेंगे।

कठिन यात्रा–स्वामी जी गुजरात से नर्मदा गए, नर्मदा से अर्वली, अर्वली से उत्तरी भारत। एक जगह रीछ का सामना हुआ। धनी झाड़ियों में से सांप की तरह लम्बे लेटकर गुज़रे, कांटों से शरीर छलनी हो गया। बर्फ के नाले में पांव सुन्न हो गए। कहीं पाव-भर दूध मिला तो कहीं खाने को जंगली कन्द-मूल।

इस प्रकार के घोर कष्ट सहते हुए अनेक स्थानों में फिरते रहे। अनेक महात्माओं के दर्शन और मेल से लाभ उठाया, तब भी मन को शान्ति न हुई। कारण यह कि शिवरात्रि की पहेली किसे ने न बुझाई।

पुस्तक प्राप्ति–उन दिनों पुस्तकें न मिलती थी। छपी पुस्तकों का रिवाज़ अभी कम था। लिखी पुस्तक किसी के पास होती भी तो वह उसे सात कोठरियों में छिपा रखता। निर्धन संन्यासी में यह शक्ति कहां कि स्वयं पुस्तक प्राप्त करे। न तो धन देकर ले सकता था, न स्वयं लिख ही सकता था। तथापि स्वामी दयानन्द ने अनेक पुस्तकें प्राप्त कीं और पढ़ीं। उन्हें इसमें कितना परिश्रम करना पड़ा, इस बात का हमें ध्यान नहीं आ सकता, क्योंकि हमें पुस्तकें आसानी से मिल जाती हैं।

शिक्षा–विद्या की खोज में वन-पर्वत एक कर देने चाहिए।

एक दिन गंगा के किनारे पुस्तक पढ़ रहे थे। विषय मनुष्य की नाड़ी-नसों का था। वर्णन कुछ उलझा हुआ-सा था। बात से बात न मिलती थी। बहुत यत्न करने पर भी समझ न आया तो सोचने लगे कि क्या करें ? देखा तो एक शव (लाश) बहा आता है। कपड़े उतारकर लंगोट कस लिया और दरिया में कूद पड़े। शव को हाथ से पकड़कर किनारे पर लाए और छुरी निकालकर उसे चीरने-फाड़ने लगे। डाक्टरों की तरह हृदय देखा। सिर तथा दूसरे अंग को काटकर देखे। पुस्तक की एक बात भी लाश में न पाई। बस, वहीं पुस्तक को फाड़कर शव के साथ बहा दिया।

शिक्षा–पुस्तकों की परख परीक्षण से करनी चाहिए। विद्या-प्राप्ति के लिए शव चीरना भी धर्म है।

इतने पर भी शिवरात्रि की गुत्थी वैसी की वैसी उलझी रही तो स्वामी जी चिन्ता में डूबे रहने लगे। पता लगा, मथुरा में एक प्रज्ञाचक्षु (अंधे) स्वामी रहते हैं। उन्हें दन्डी विरजानन्द कहते हैं। वे वेद और व्याकरण के विद्वान हैं। जी में आई-चलें, उनके भी

पांव धो देखें। क्या पता वही मनोरथ सिद्ध हो जाए।

पुस्तक प्रवाह–यह सोच मथुरा गए और यमुना के किनारे दण्डी जी का दरवाजा खटखटाया। दण्डी जी के यहां पठन-पाठन होता था। उन्होंने स्वामी जी से पूछा, ''क्या पढ़े हो ?'' आपने किताबों के नाम कह सुनाए। दण्डी जी ने फिर पूछा, ''क्या ये पुस्तकें पास में हैं'' 'हां' कहने के साथ ही आज्ञा मिली, ''इन सब को दरिया में डाल दो।''

यह आज्ञा मानें तो क्लेश! न मानें तो क्लेश! पुस्तकों को कहीं छिपा ही न दें। नहीं! यह छल है। इन्हीं पुस्तकों के लिए वन-पर्वत छान मारे, इन्हीं के लिए गहरी गुफाओं में उतर गए। हड्डियां टूट गई, शरीर छिल गया, तब कहीं ये रत्न हाथ आए। अब इन्हें एक क्षण में यमुना में प्रवाहित कर दें ?

हां! गुरु पाना सहज नहीं। पहली ही आज्ञा तोड़ी तो ज्ञान क्या खाक मिलेगा ? दिल को कड़ा किया, छाती पर पत्थर रख उस अज्ञान के भण्डार को बहते जल की भेंट कर दिया।

शिक्षा–गुरु की आज्ञा सिर आंखों पर रखो।

भोजन और स्थान–दयानन्द निर्धन तो थे ही; उनके पास न खाना खरीदने को पैसा था और न ठहरने को स्थान–एक मन्दिर के दरवाज़े में एक ओर की तंग कुठरिया में सुकड़कर पड़े रहते। खाने के समय कुछ भुने हुए चने चबा लेते। अन्त में एक धनी को दया आई और आपके खाने का प्रबन्ध हुआ।

तेल–दिन को तो सूर्य का दीपक अपने-आप जलता था। रात को क्या करें ? पैसा पास नहीं कि तेल लें और दीया जलाएं। स्त्रियां दीवारों में कपास की बत्तियां या चौराहों पर मिट्टी का दीया जला जातीं वे उन दीपों और बत्तियों को इकट्ठा करते और पढ़ते। अन्त में किसी और धनी की दया से तेल का प्रबन्ध हो गया।

गुरु की सेवा–स्वामी जी दण्डी जी के शिष्य तो बन ही गए थे। गुरु जी का नियम था नित्य यमुना के ताज़े जल से स्नान करते। पानी लाने का काम दयानन्द को मिला था। सो गरमी हो, सरदी हो, आंधी हो, वर्षा हो, दयानन्द इस गुरु-सेवा के काम से कभी न चूके।

गुरु की बात–गुरु जी की कुटी में झाड़ू भी दयानन्द ही दिया करते थे। एक दिन झाड़ू देकर कूड़ा एक ओर रख, बाहर फेंकने के लिए टोकरी देख रहे थे कि श्री विरजानन्द की टांग कूड़े पर जा पड़ी। गुरु जी क्रोध में आ गए और उन्होंने दयानन्द की ज़ोर से लात मार दी। आप कुछ समय पीछे वह टांग दबाने जा बैठे और नम्रता से कहने लगे, ''गुरुवर! मेरा शरीर तो तपस्या से पत्थर हो गया। उसे आपकी लात जैसे लगी ही नहीं। हां! आपकी लात अवश्य दुखती होगी।''

शिक्षा–विद्या का साधन तप है। गुरु की ताड़ना भी शिष्य की शिक्षा का साधन होती है।

वेदों की शिक्षा–सच पूछो तो पुस्तकें दरिया में फिंकवाकर दण्डी जी ने अज्ञान का भार स्वामी जी के हृदय से उतार दिया था। तब से लगे उन्हें वेद के अर्थ बताने। गुरु जी ने कहा, ''बेटा! यह ज्ञान ईश्वर का दिया हुआ है। दूसरी पुस्तकें मनुष्यों ने स्वयं बनाई हैं। उन पुस्तकों में भी जो पुस्तकें ऋषियों ने लिखी हैं, वे वेद के अनुकूल और सत्य हैं। तू वेद ही को सच्चा मान, ऋषियों की पुस्तकें भी श्रद्धा से पढ़। वेद कसौटी है–जिसे वह सच्चा कहे, वह सच्चा है; अन्य सब झूठे हैं।''

दयानन्द को इस शिक्षा ने अपूर्व आनन्द दिया। रोज़ के उपदेश से बुद्धि शुद्ध हो गई। एक शिवरात्रि ही क्या, सारे जीवन की गुत्थियां सुलझ गई। अतीव शान्ति को पाकर उन्होंने उस दिन को धन्यवाद दिया, जब दण्डी जी का दरवाज़ा खटखटाया था।

समावर्तन–दण्डी जी ने देखा कि अब चेले विद्वान् हुए। खोटे-खरे को जान गए, सत्य-असत्य को पहचान गए। उन्होंने एक दिन समावर्तन के लिए नियत किया कि उस दिन शास्त्रों की रीति से शिष्यों की शिक्षा की समाप्ति करेंगे।

सब विद्यार्थी गुरु जी के लिए भेंट लेने गए। दयानन्द को कुछ लौंग मिले। वे लौंग ही गुरुजी के चरणों में रखकर विनयपूर्वक कहा, ''महाराज! लौंग छोटी चीज़ है, पर और कुछ मिला नहीं, क्या भेंट करूं ?''

गुरु जी प्रसन्न थे कि आज जीवन का कार्य पूरा हुआ। कहा, ''बेटा! तुम्हारी यह भेंट क्या है जिसे मैं लूं; मुझे तो कुछ और चाहिए। मैंने जो ज्ञान दिया उसे सफल करो। संसार वेदों को भूल गया है; तुम फिर उसे वेदों को शिक्षा दो। घर-बार छोड़ो, खुले मैदान तुम्हारे घर हैं। भूमि को सेज समझो, पत्थरों को सिरहाना बनाओ। आप दुःख उठाओ, संसार को सुख दो। कौन है, जो यह मुझे दक्षिणा देगा ?''

स्वामी जी पहले ही त्यागी थे। कुछ सहमे भी कि काम कठिन है। गुरु जी ने ढाढस बंधाया, टूटे हृदय ने शक्ति पाई। कहा, ''परम पूज्य गुरुवर! परमात्मा आपका एक-एक अक्षर सच्चा करे। दयानन्द अपने तन-मन की दक्षिणा देता है।''

शिक्षा–विद्या की सफलता विद्यादान से होती है।

स्वामी जी उनतालीस वर्ष के थे, जब गुरु की कुटी से निकले। सारा संसार सामने पड़ा था और गुरु जी के आशीर्वाद के

सिवा और कोई साथी न था। चार वर्ष आगरा, ग्वालियर, पुष्कर आदि स्थानों में फिरे। स्वामी जी ने देखा कि लोग पुराणों को अपनी धर्म-पुस्तकें मानते हैं। वेदों का तो नाम भी कोई नहीं जानता। पुराणों में भी भागवत पुराण का बड़ा प्रचार है।

बस, फिर क्या था। इस पुराण के पीछे लट्ठ उठा लिया। बुरी पुस्तक होने के कारण सदैव उसकी निन्दा करते और उसे छोड़ने पर बल देते।

उसी वर्ष हरिद्वार में कुम्भ का मेला था। यह मेला हर बारहवें वर्ष होता है। इसमें भारत-भर के नर-नारी इकट्ठे होते हैं। भीड़ इतनी होती है कि तिल धरने को स्थान नहीं रहता। स्वामी जी ने सोचा, प्रचार का अच्छा मौका है और समय आते ही वहां जा विराजे।

हरिद्वार से यात्री ऋषिकेश को जाते हैं। ऋषिकेश साधुओं का स्थान है। उसी रास्ते में स्वामी जी ने अपना झण्डा गाड़ा। उस पर लिखा था–'पाखण्ड-खण्डिनी पताका।'

लोग 'हर की पैड़ी' पर स्नान करके समझते, हमारे जीवन-भर के पाप धुल गए। यहां पहुंचते तो यह भ्रम ही धुल जाता। यहां तो उपदेश होता कि 'हर की पैड़ी' पर नहाने से कुछ नहीं बनता। अच्छे कर्म करो, वेद की शिक्षा पर चलो! यह पुण्य है, यही तीर्थ है।

कुम्भ पर आकर स्वामी जी ने भारत का एक छोटा-सा चित्र देख लिया। साधुओं के कई रंग थे। सबसे बुरे नागे थे जो लंगोट तक न पहनते थे। न उन्हें स्त्री की लज्जा थी, न पुरुष की। बैठे कुचेष्टा करते रहते। वैरागी, उदासी, निर्मल और न जाने कितने प्रकार के और साधु थे। इन्हें पहले नहाने का हठ था, पुलिस न होती तो दंगा करते। महन्त और साधु गद्दीदार हाथियों पर चढ़कर आते। ठाठ राजाओं से भी बढ़कर था। जो पूछो तो 'त्यागी' हैं।

पण्डे चारों ओर जिस तरह बनता–हाथ जोड़कर, डर दिखाकर, ठगकर, लजाकर–यात्रियों से रुपये ठग रहे थे। ये यहां के 'ब्राह्मण' थे।

चोरी-चकारी का खुला मौका था। कई जेबें कतरी गई, बच्चे गुम हो गए, लड़कियां खो गई। माता-पिता मुंह-सिर पीटकर रह गए।

एक हर की पैड़ी की डुबकी के लिए कितने अनर्थ हुए। कई आदमी भीड़ में कुचले गए, नहाते-नहाते किसी का पांव जो फिसला तो धम से गंगा माई की गोद में जा रहा।

यह सब कुछ क्यों हुआ ? केवल इसलिए कि लोगों ने पानी में पुण्य समझा है। एक विशेष पैड़ी पर नहाने को धर्म मान रखा है और फिर उसके लिए भी एक ही दिन नियत किया गया है।

स्वामी जी ने सब ओर नज़र दौड़ाई, सारे भारत को भ्रम में डूबा पाया। इतने बड़े पाखण्ड का खण्डन एक पताका कैसे करेगी ? विरजानन्द की यह बात सोलहों आने सच्ची पाई कि संसार वेद को भूल गया है। अपने अन्दर दृष्टि डाली और सोचा कि क्या मैं इस हर की पैड़ी पर डूबतों को वेद के घाट पहुंचा सकूंगा।

स्वामी जी ने व्रत किया कि एक लंगोट के सिवाय अब मैं और कुछ पास न रखूंगा। यही मेरा ओढ़ना है, यही मेरा पहनना है। ईश्वर के चिन्तन से शक्ति बढ़ाऊंगा। अन्त में वह दिन आएगा जब झूठ का कोट गिरेगा और सच की विजय होगी।

यह सोचकर स्वामी जी जंगल को चले गए और तप में मग्न रहने लगे।

शिक्षा–बड़े झूठ का नाश बड़ी तपस्या से होता है।

एक रात गंगा किनारे चांदनी छिटकी हुई थी। माघ महीने की ठंडी हवा शरीर को छेदती हुई निकली जाती थी। लोग भारी-भारी पश्मीनों और लिहाफों में भी ठण्ड के मारे कांप रहे थे। इतने में बदायूं के कलक्टर महाशय एक पादरी को साथ लिए गंगा पर आ निकले। देखा तो ठण्डी रेत पर एक योगी आसन लगाए ध्यान में मस्त बैठा है। पास गये तो योगी की आंख खुल गई। योगी ने केवल लंगोट ही पहना हुआ था।

कलक्टर-साधु जी आपको ठंड नहीं लगती ?

पादरी-खाने को खीर आदि बल देने वाला तर माल मिल जाता होगा, फिर ठण्ड लगे तो क्यों-कर ?

योगी– (मुस्कराकर) बाबा! अंडे-मांसादि गर्म वस्तुएं तो तुम खाते हो। हम रूखी चपाती खाने वाले क्या उड़ाएंगे ? खाने ही से ठंड का बचाव होता हो तो ज़रा कोट उतार कर मेरे पास बैठ जाइएं।

कलक्टर-(पादरी को चुप कराकर) फिर क्या बात है ?

योगी-बात और क्या है। आपका मुंह भी तो नंगा है, इसे ठंड क्यों नहीं लगती?

कलक्टर-मुंह हमेशा नंगा रहता है, इसीलिए इसे ठंड नहीं लगती ?

योगी-हमारा सारा शरीर भी सदा नंगा रहता है।

पादरी और कलक्टर प्रणाम करके चल दिए।

2. ऐसे ही एक बार और, माघ की ठंड में उप-देश कर रहे थे। सुनने वाले भारी-भारी दुशालों में भी कांप रहे थे। यह एक

लंगोट में ही मौज में थे। किसी ने कारण पूछा, तो कहा, ''योग का अभ्यास है।''

किसी और ने कहा, ''योग का अभ्यास है।''

किसी और ने कहा, ''इससे कुछ अधिक दिखाइए।''

स्वामी जी ने अंगूठे घुटनों पर रखकर बल लगाया तो झट सारे शरीर से पसीना गिरने लगा। यह देखकर सब चकित थे कि–अयं! इस ठंड में पसीना ?

शिक्षा–तपे हुए शरीर पर सर्दी-गर्मी का क्या काम ?

1. स्वामी जी अनूपशहर में उपदेश दे रहे थे। इतने में उमेदा नाई भोजन का थाल लाया। स्वामी जी प्रेमपूर्वक सभा में ही भोजन करने लगे। सभा में कुछ ब्राह्मण बैठे थे। उन्होंने शोर मचा दिया कि....''यह क्या ? नाई भ्रष्ट है। उसके यहां का भोजन संन्यासी को नहीं करना चाहिए।''

स्वामी जी हंसे और कहा, ''रोटी तो गेहूं की है। नाई का तो केवल प्रेम-भाव है। शुद्ध पवित्र भोजन चाहे कोई लाए, खा लेना चाहिए।''

2. बम्बई में स्वामी जी के डेरे पर एक बंगाली आया। बातचीत करते-करते उसने पानी मांगा। बंगाली की दाढ़ी लम्बी थी। भक्तों ने समझा, कोई मुसलमान है। उन्होंने उसे गिलास देने की जगह पत्तों के दोनों में पानी दिया। स्वामी जी भड़क उठे और भक्तों को डांटकर कहा, ''कोई किसी जाति का हो, उसका यह अनादर क्यों करो कि गिलास तक न दो! यही तो कारण है कि इस जाति ने अपने में से लाखों-करोड़ों भाई-बहन निकाल तो दिए हैं, परन्तु अपने में मिलाया एक मनुष्य भी नहीं।''

शिक्षा–मनुष्य से छिः छिः करने वाले स्वयं छिः छिः किये जाने के योग्य हैं। आदर से पराये अपने बनते हैं, निरादर से अपने पराये।

कुम्भ के पश्चात् कौपीन-मात्र पहने स्वामी जी गंगा के किनारे विचरने लगे। उनके उपदेश का सार यह था–गंगा-स्नान कुछ नहीं। पानी से शरीर की तो सफाई होती है, पर आत्मा की नहीं। कण्ठी-तिलक में क्या धरा है ? इन निशानियों से जाति में फूट आई है। ईश्वर का अवतार नहीं होता। जो सब जगह है, वह एक आकार में कैसे आए ? इत्यादि।

कई लोग इन सच्ची बातों को न सहकर स्वामी जी के शत्रु हो गए, परन्तु सच्चे को डर किसका था ?

1. गंगा में डाल दिया–एक बार विरोधियों ने सलाह की कि इन्हें दरिया में डाल दिया जाए। उन्होंने रात के समय एक अचेत सोते फकीर को, यह समझ-कर कि दयानन्द है, गंगा में फेंक दिया। उसने चीख मारी तो पता लगा कि यह कोई और है। तब कहीं धूर्तों ने उसे बाहर निकाला।

2. मगरमच्छ–एक दिन स्वामी जी गंगा के बीच में इस प्रकार लेटे थे कि आधा शरीर पानी के अन्दर था और आधा बाहर। पास ही से एक मगरमच्छ निकल आया। देखने वालों ने शोर मचाया। पर स्वामी जी वैसे ही लेटे रहे। कहा, ''जब हम कुछ नहीं कहते तो वह हमें क्यों छेड़ेगा।'' इतने में मगरमच्छ गुम हो गया।

3. पान में विष–अनूपशहर में किसी ने पान में विष दिया। चबाने से पता लगा तो न्योली-कर्म किया और विष निकाल दिया। तहसीलदार सय्यद मुहम्मद आपका भक्त था। वह था तो मुसलमान, पर ऋषि में उसकी बड़ी श्रद्धा थी। उसने हत्यारे को पकड़वाकर बन्दीगृह में डाल दिया। कुछ समय पीछे वह स्वामी जी की सेवा में आया तो स्वामी जी क्रुद्ध हुए और कहा–

''मैं संसार को कैद कराने नहीं आया हूं, कैद से छुड़ाने आया हूं।'' यह सुनते ही तहसीलदार ने अपराधी को छोड़ दिया। स्वामी दयानन्द जी की दया देखिए! हत्यारे से भी वैर नहीं रखा।

4. राव का वार–जब स्वामी जी कर्णवास में थे तो विरोली के ठाकुर रणवीर सिंह गंगा-स्नान के लिए वहां आए। एक रात उन्होंने रासमंडल किया और स्वामीजी को रास में पधारने को बुलवाया।

स्वामी जी ने रास को नीच काम बताया और कहा, ''यह कैसे धूर्त हैं। अपने बड़ों के स्वांग निकालते और उन्हें स्त्रियों सहित नचाते हैं। अपनी मां-बेटियों से ऐसा करें तो पता लगे।''

राव कर्णसिंह को ऋषि का यह उत्तर सुनकर क्रोध आया और वह कई सेवक साथ लेकर स्वामी जी के स्थान पर पहुंचा। उसकी आंखें लाल थीं और मुंह से गालियों की वर्षा कर रहा था। स्वामी जी हंसते रहे, पर सच कहने से नहीं चूके।

एक सेवक ने स्वामी जी पर हाथ बढ़ाया तो स्वामी जी ने बैठे-बैठे उसे धक्का दिया और वह पीछे जा गिरा।

अब राव साहब ने तलवार निकाली। स्वामी जी ने गरज कर उसके हाथ से तलवार छीन ली और भूमि पर एक हाथ से ऐसे ज़ोर से टेकी कि वह टुकड़े-टुकड़े हो गई।

राव कर्णसिंह को अब अपनी भी सुध न रही। वह झट भयभीत होकर भागा।

सबने कहा–पुलिस से पकड़वाओ। स्वामी जी ने उत्तर दिया, ''उसने क्षत्रिय-धर्म छोड़ा तो मैं भी ब्राह्मण-धर्म को छोड़ दूं ? मुझे अपना बचाव करना था सो अपने-आप हो गया। इससे

अधिक कष्ट न पुलिस को दूंगा न अपराधी को। क्षमा से सम्भव है, सुधर जाए।''

शिक्षा–सांच को आंच नहीं। महात्मा अपनी रक्षा स्वयं कर लेते हैं।

जब स्वामी जी पर न विष चल सका, न तलवार तो लोगों को इसके अलावा कोई चारा न दिखा कि पंडितों द्वारा शास्त्रार्थ कराके सच-झूठ का निर्णय करें। बहुत स्थानों पर तो रामरौला ही मचता रहा, परन्तु जब दूसरी बार कर्णवास में आए तो पंडित हरिवल्लभ से शास्त्रार्थ हुआ।

संस्कृत प्रवाह–इन पंडित जी को सामवेद और यजुर्वेद याद थे। आप विद्वान भी बड़े थे। मूर्तियां सिंहासन पर लेकर बैठे थे कि स्वामी जी से इन्हें भोग लगवाऊंगा, तब उठूंगा। इन्हें सहायता देने को और पंडित भी साथ थे। सात दिन तक धड़ाधड़ संस्कृत में संवाद हुआ, किसी दिन छः घण्टे, किसी दिन नौ घंटे अन्त में पंडित जी ने माना कि स्वामी जी पूर्ण विद्वान हैं और सच कहते हैं कि मूर्ति-पूजा वेद-विरुद्ध है।

ठाकुर प्रवाह–यह कहकर पंडित जी ने ठाकुर गंगा में फेंक दिए। इनकी देखादेखी और भी बहुतों ने अपने-अपने ठाकुरों को गंगा-प्रवाह का अन्तिम स्नान कराया। ऐसे ही और स्थानों में भी अनेक मूर्तियां गंगा मैया की भेंट हुई।

यह तो हुआ मूर्तियों का हाल। अब मन्दिरों का हाल सुनिए।

मन्दिर से पाठशाला–फर्रुखाबाद में ला० बंशी लाल ने मन्दिर बनवाया। उसमें शिवलिंग की स्थापना होनी थी। इधर स्वामी जी के उपदेशों की धूम थी। विद्वान् हार रहे थे। समझदार मूर्ति-पूजा से विमुख हो रहे थे। लाला जी ने निश्चय किया कि मन्दिर पर लगा हुआ रुपया निकम्मा जाएगा। इससे एक पत्थर ही पर ताला लगा रहेगा, और होगा क्या ? स्वामी जी की आज्ञा लेकर मन्दिर की जगह पाठशाला बनवा दी।

शिक्षा-मूर्ति पूजा वेद विरुद्ध है। शिवालयों की जगह पाठशालाएं खुल जाएं तो उत्तम है।

हिन्दू लोग काशी जाते हैं। अंग्रेजी–उर्दू पढ़े उसे बनारस कहते हैं। वहां संस्कृत के बड़े पंडित रहते हैं, फिर भी धर्म का बुरा हाल है। काशी की कहावता है–'जेते कंकर तेते शंकर।' एक-एक पत्थर को परमेश्वर मानकर पूजते हैं। वह कौन-सा पाप है जिसकी काशी में बहुतायत न हो! चोरी, ठगी, व्यभिचार–सब कुछ वहां होता है। फिर भी काशी पूज्य भूमि कहलाती है।

काशी की पत्री–जब और स्थानों पर पंडित एक-एक करके हारते गए, तो अन्त को उन्हें काशी याद आई। वहां से एक पत्री लिखा लाए कि मूर्ति, तिलक अवतार सब ठीक हैं। स्वामी जी ने पत्री पढ़ी तो समझ गए कि काशी के ढोल भी दूर ही से सुहावने लगते हैं। उन्होंने झट ठान ली कि इस पौराणिक गढ़ को भी वेद के नाद से हिला के छोड़ेंगे। फिर क्या था! भ्रमण करते-करते थोड़े ही दिनों में वहां जा पहुंचे।

शहर में कोलाहल मच गया कि एक ऐसा लंगोट-धारी साधु काशी में आया है जो संस्कृत में बोलता है और ठाकुरों की निन्दा करता है। राजा ने स्वामी जी को बुलवाया, पर स्वामी जी नहीं गए। अन्त को शहर के बड़े-बड़े पंडित इकट्ठे हुए और राजा के प्रबन्ध से शास्त्रार्थ की ठहरी। जब उसका वृतान्त सुनिए:

शास्त्रार्थ–शास्त्रार्थ क्या था! सारी काशी एक तरफ थी और हमारा संन्यासी अकेला एक तरफ था। स्वामी जी केवल लंगोट धारण किए चौकी पर बैठे थे। शरीर का तेज ऐसा था कि सभा के सिरमौर यही प्रतीत होते थे। दूसरी ओर भारत-भर के परम पूज्य पंडित पगड़ियां बांधे, तिलक लगाए, चोगे पहने विरा-जमान थे। काशी के जो राजा सभापति थे, वे भी मूर्ति पूजक और मूर्तिपूजकों के संरक्षक थे। बात चली और प्रश्न-उत्तर हुए। मूर्ति-पूजा वेद से सिद्ध न हुई। इधर-उधर के प्रश्न किए ताकि समय टल जाए। एक पंडित ने दो फटे पत्र आगे किए और कहा-देखो, ये वेद हैं। पत्र वेद के न थे। स्वामी जी देख ही रहे थे कि किसी ने ताली पीट दी और सारी सभा उठ खड़ी हुई। धूर्तों ने ऊधम मचा दिया। अधिक शरारत करने पर पुलिस ने ऐसा न करने दिया। समझने वाले समझ गए कि काशी खोखली है। पंडितों ने भी जान लिया कि यदि एक साधु सत्य का पक्ष लेकर आ जाए तो हमारी सारी शेखी किरकिरी कर सकता है।

स्वामी जी का साहस सराहनीय है कि अकेले बिना किसी सहायक के विपक्षियों के गढ़ में जा खड़े हुए और अपने अनोखे विद्या-बल से काशी जैसे गढ़ को हिला दिया।

स्वामी जी की यह सबसे बड़ी विजय थी। काशी भारत की धार्मिक राजधानी है। इसे जीता तो मानो भारत-भर को जीत लिया।

फिर कई बार यहां आए और शास्त्रार्थ की घोषणा की, पर किसी में आगे आने का साहस न हुआ।

शिक्षा–सत्य ही सबसे बड़ा बल है।

स्वामी जी का शरीर चित्र में भी बोल रहा है। उनका रंग-रूप ही बता रहा है कि मैं बल का भंडार हूं।

1. मिर्ज़ापुर में पगडण्डी पर जाते हुए एक सांड सामने आ गया। साथ वाले भाग गए, पर स्वामी जी छाती ताने खड़े रहे।

सांड़ मार्ग को छोड़कर एक ओर चला गया। किसी ने पूछा-सांड़ सींग मारता तो ?

स्वामी जी बोले-इन हाथों से हटा देते।

2. कर्णवास में राव कर्णसिंह का पहला वार तो तुम्हें याद ही होगा। स्वामी जी फिर वहां आए तो वह भी वहां था। अब के स्वयं आने का साहस न हुआ। रात को रुपये का लालच देकर उसने एक सेवक को भेजा कि स्वामी जी का सिर उतार लाए।

स्वामी जी इन दिनों भी एक लंगोट में ही रहते थे। सर्दी के दिन थे। दरिया का किनारा था, पर तपस्वी को इसमें कष्ट न था।

सेवक दो बार तो डरकर कोरा लौट गया, तीसरी बार कई लोग इकट्ठे होकर आए। पर ज्यों ही स्वामी जी ने 'हूं' शब्द किया और पांव भूमि पर मारकर पूछा कि 'कौन है ?' वहीं उनके हाथ से तलवार छूट गई और वे धूर्त भाग गए।

कर्णवास के ठाकुरों और अन्य लोगों ने कहा कि हम राव को सीधा किए देते हैं, पर स्वामी जी ने रोक दिया।

किसी ने स्वामी जी को समझाया कि अब सावधान रहना चाहिए। ऋषि ने उत्तर दिया:

''नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक:।''

अर्थात् इस आत्मा को न शस्त्र काट सकते हैं, न आग जला सकती है। कोई आएगा भी तो हमारा क्या बिगाड़ लेगा ?

शिक्षा–ब्रह्मचारी के बल को न शत्रु जीत सकते हैं और शस्त्र।

विपक्षियों ने मथुरा में एक और युक्ति खड़ी की। जानते थे स्वामी जी का बल ब्रह्मचर्य ही के कारण है सो इसे भंग करने पर तुल आए।

एक वेश्या को गहने पहनाकर स्वामी जी के पास भेजा कि हो न हो, इसका जादू चल जाएगा। स्वामी जी समाधि लगाए परमात्मा का चिन्तन कर रहे थे। चेहरे से योग का तेज बरस रहा था। वेश्या एक बार तो डरकर बाहर निकल आई। धूर्तों ने कुछ लोभ चढ़ाकर, कुछ डर दिखा कर भेजा। वेश्य फिर गई तो स्वामी जी की पवित्र छवि पर ऐसी मुग्ध हुई कि गहने उतारकर रोने लगी। स्वामी जी की समाधि खुली तो हैरान हुए।

अब वेश्या, वेश्या न रही थी। ऋषि के पांव पर गिरी और अपना अपराध सुनाकर क्षमा मांगने लगी। आगे से उसने पवित्र जीवन का व्रत लिया। उसने चाहा तो यह भी कि गहने स्वामी जी ले लें। पर वे उनके किस काम के थे। उनका तो व्रत था कि लंगोट के सिवाय और कुछ पास नहीं रखना। उन्होंने गहने लौटा दिए और आशीर्वाद दिया किन्तु आगे सदैव पवित्र बनी रहे।

शिक्षा–योगी का तेज पापनाशक होता है, दर्शन करने से ही पापी पवित्रात्मा बन जाते हैं। धर्म का प्रचार सदाचार से होता है।

स्वामी जी बंगाल का दौरा करते हुए कलकत्ता गए जो उन दिनों भारत की राजधानी था। आपके वहां भी भाषण हुए! ब्रह्मसमाज के बाबू केशवचन्द्र सेन आपकी सेवा में आते और भक्ति दर्शाते रहे!

जगद्विख्यात कवि महात्मा रवीन्द्रनाथ टैगोर के पिता महात्मा देवेन्द्रनाथ टैगोर अपने घर में स्वामी जी के उपदेश कराकर अपने कुटुम्ब का कल्याण करते रहे।

1. एक दिन बाबूजी ने स्वामी जी से कहा, ''यदि आप अंग्रेजी पढ़े होते तो मैं आपको इंग्लैंड चलने की प्रार्थना करता। वहां खूब प्रचार होता।'' आपने उत्तर दिया, ''यदि आपको संस्कृत आती होती तो आप अपने देश-भाइयों का बहुत भला कर सकते।''

2. वहीं किसी महाशय ने प्रार्थना की, ''यदि आप यह न कहें कि 'ये बातें वेद में हैं,' किन्तु यह कहें कि 'यह मुझे ईश्वर ने स्वयं कहा है', तो लोग अधिक विश्वास करेंगे।'' स्वामी जी ने उत्तर दिया, '' 'परमेश्वर हमें वेद ही का उपदेश करता है।'

3. स्वामी जी अब तक केवल लंगोट पहनते रहे थे। बाबू जी ने समझाया कि अब आपको नगरों में जाना है जहां स्त्रियां भी होंगी, इसलिए वस्त्र पहनना उचित है। स्वामी जी तब से कपड़े पहनने लगे।

शिक्षा–सुनो सबकी, पर मानो वही जो ठीक हो।

दिल्ली-दरबार–सन् 1877 ई० में लार्ड लिटन ने दिल्ली में दरबार किया, जिसमें भारत-भर के राजा, रईस, सब प्रान्तों के गवर्नर तथा अंग्रेज़ और देसी सर्वसाधारण गण पधारे। स्वामीजी को प्रचार की धुन थी। ऐसा बड़ा मेला हाथ से जाए, यह असम्भव था! जहां राजा-महाराजाओं के कैम्प थे, वहां स्वामी दयानन्द सरस्वती का डेरा विद्यमान था. उसकी खूब धूम थी।

स्वामी जी ने वहां उपदेशों की झड़ी लगा दी और कई राजा-महाराजा तथा प्रजा के नेताओं ने दर्शन किए और उपदेशों से लाभ उठाया।

स्वामी जी ने वहां विशेष बात यह है कि उस समय जो लोग भारत के सुधार का काम कर रहे थे- जैसे मुसलमानों में सर सय्यद अहमद खां, ब्रह्मसमाज के केशवचन्द्र सेन, नवीनचन्द्र राय और हरिश्चन्द्र चितामणि तथा हिन्दुओं में कन्हैयालाल अलखधारी और मुंशी इन्द्रमणि-इन सबको अपने डेरे पर बुलाया और कहां, ''अलग-अलग काम करने से क्या बनता है ? आओ, वैदिक

धर्म को मानकर एक साथ काम करें।'' शोक है कि ये महाशय अपने अलग-अलग मतों में ही रहे और एक न हो सके।

ये सब महाशय दूसरे मतों के थे, परन्तु स्वामी जी का इन पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि मरते दम तक ऋषि के भक्त बने रहे।

चांदपुर का मेला–इसके पश्चात् कई सज्जनों ने चांदपुर ग्राम में मेला किया और मुसलमानों, ईसाइयों और वैदिक धर्मियों को बुलाया कि आपस में धर्म-विचार करें। मुसलमानों की ओर से मौलाना मुहम्मद कासिम, ईसाइयों की ओर से पादरी नोबल और वैदिक धर्मियों की ओर से स्वामी जी ने संवाद किया। तीनों के हस्ताक्षरों से वहां का सारा संवाद छप गया। उसे पढ़ने से पता लगता है कि वैदिक सिद्धान्तों के आगे किसी और मत की नहीं चल सकती।

शिक्षा–सच्चाई छिपाने के लिए नहीं, फैलाने के लिए है। यत्न करो कि सारा संसार वैदिक धर्मी हो।

संयुक्त प्रान्त और बंगाल में धर्म का उपदेश कर स्वामी जी बम्बई गए। इसी प्रान्त का एक भाग गुजरात था, जहां आपका जन्म हुआ था।

बम्बई–बम्बई में आपने पहला समाज स्थापित किया। अहमदाबाद आदि स्थानों से भी आपके भाषण हुए। शास्त्रार्थ का प्रबन्ध भी हुआ। हर दूसरे पक्ष वाले टालते रहे। आचार्य कंवलनयन, जो वल्लभ मत के गद्दीदार थे और अच्छे विद्वान गिने जाते थे, सभा में इसी विचार से आए कि संवाद करेंगे। पर कुछ ऐसे घबराए कि बोले बिना उठ गए, विचार होने ही न पाया। लोग समझ गए कि कौन कितने पानी में है।

पूना–पूना के लोग स्वामी जी के उपदेश पर ऐसे मुग्ध हुए कि एक दिन ऋषि के सम्मान के लिए नगर कीर्तन किया। महादेव गोविन्द रानाडे हाईकोर्ट के जज थे। वे स्वामी जी के भक्त हो गए थे। श्री स्वामी जी महाराजा हाथी पर बैठे थे। आगे बाजे-गाजे और भजन हो रहे थे। जनता तथा जज महोदय साथ-साथ जा रहे थे।

शत्रुओं को यह देखकर आग-सी लग गई। दूसरे दिन एक आदमी का मुंह काला कर उसे गधे पर चढ़ाया। उसे गाली भी देते थे, पत्थर भी फेंकते जाते थे और नाम लेते थे स्वामी जी का।

आर्यों के पास हाथी था, भजन थे, बाजे थे। उन्होंने इस प्रकार की सज-धज की। विपक्षियों के पास गधा था, गालियां थी, पत्थर थे। उन्होंने उसी से नगर-कीर्तन कर लिया।

किसी भक्त ने स्वामी जी को सूचना दी कि बाज़ार में यह रामरौला हो रहा है। स्वामी जी हंसे और उन्होंने एक-एक बात का उत्तर अत्यन्त उदारता से दिया जो सुने योग्य है:

भक्त–विपक्षी आपको गालियां देते हैं।

स्वामीजी–अच्छा है। गालियों से पेट खाली हो चुकेगा तो फिर अच्छे शब्द कहेंगे, सो इसमें तो मेरी कीर्ति है।

भक्त–एक आदमी का मुख काला कर उसे गधे पर चढ़ा दिया है और उसे आपके नाम से पुकार रहे हैं।

स्वामी जी–सच्चे दयानन्द को कभी कोई कालिख नहीं लगी, और बनावटी दयानन्द का तो मुंह काला होना ही हुआ।

भक्त–आपका नाम ले-कर पत्थर फेंक रहे हैं।

स्वामीजी–कल पत्थर पूजते थे, आज पत्थर फेंक रहे हैं! तब तो मेरी बात मान गए।

भक्त–आपको जन्म से नीच कहते हैं।

स्वामीजी–मैं भी तो यही कहता हूं कि जन्म से सब नीच हैं। जिसने पढ़ा-पढ़ाया वह ब्राह्मण हो गया, जो धर्म के लिए लड़ा वह क्षत्रिय हुआ; और जिसने व्यापार या खेतों का काम किया वह वैश्य हुआ; नहीं तो शूद्र है। मैंने ब्राह्मण के यहां जन्म लिया था। ब्राह्मण के बेटे को जन्म से नीच माना तो मेरे ही सिद्धान्त पर आए। मुझे ये सारी बातें सुनकर प्रसन्नता हो रही है।

इस प्रकार वे दुर्वचनों के भी अच्छे ही अर्थ लेते रहे और क्रोध में न आए।

शिक्षा–गाली से चिढ़ना नहीं चाहिए; न गाली का उत्तर गाली में देना चाहिए। किन्तु शत्रु से भी प्रेम-पूर्वक बर्ताव करके उसे जीतना चाहिए।

पंजाब प्रान्त की बारी उस समय आई जब स्वामी जी के ऋषित्व का लोहा संसार मानने लगा था। उस प्रान्त में आकर स्वामी जी ने बहुत समाज खोले।

अमृतसर–दुष्ट लोग यहां भी न टले! अमृतसर में व्याख्यान हो रहा था कि विपक्षी बीच में आ कूदे। उन्हें मानपूर्वक बिठाया गया। उनके साथ गुण्डों की सेना थी। थोड़ी देर चुप रहे, फिर सभा में खलबली डालने को ईंट-पत्थर फेंकने लगे। स्वामी जी को तो एक भी ईंट न लगी पर और कई भले मानसों को चोट आई। स्वामी जी ने सबको धैर्य देते हुए कहा–

''आज जहां हमारे भाइयों पर पत्थर बरसते हैं, वहां किसी दिन फूल बरसेंगे।''

बात सच्ची थी। अब जहां कहीं स्वामी जी के भक्त जाते हैं उन पर फूलों की वर्षा होती है।

वज़ीराबाद में स्वामी जी पर पत्थर फेंके गए। एक रोड़ा ठीक उनके माथे पर लगा और लहू बहने लगा। स्वामी जी ने माथा रूमाल से पोंछ लिया और शांति से उपदेश देते रहे।

शिक्षा–धर्म के प्रचारक को पत्थरों की बौछार फूलों की वर्षा प्रतीत होती है.

1. जालंधर में सरदार विक्रमसिंह ने स्वामी जी से कहा कि सुना है, ब्रह्मचारी बहुत बलवान् होता है।

स्वामीजी–हां, शास्त्रों में भी लिखा है और बात भी ठीक है।

सरदार–इसका प्रमाण ?

स्वामी जी चुप रहे।

सरदार बग्घी पर चढ़कर जाने लगे। साईस ने अपना सारा ज़ोर लगा लिया, पर घोड़े आगे को हिलते ही न थे। पीछे देखा तो स्वामी जी ने पहिया पकड़ रखा है।

स्वामी जी ने बग्घी छोड़ दी और कहा–लीजिए ब्रह्मचर्य का प्रमाण!

2. ऐसे ही गुजरांवाला में व्याख्यान देते हुए आपने गरजकर कहा था कि जिसे अपने बल का भरोसा हो, मेरे उठे हुए बाहु को नोचा कर दिखाए। वहां कई कश्मीरी पहलवान बैठे थे। किसी को साहस न हुआ कि उत्तर दे।

शिक्षा–ब्रह्मचर्य का बल सबसे बड़ा है।

1. स्वामी जी जहां पुराणों के दोष दिखाते थे, वहां इंजील तथा कुरान का भी खण्डन करते थे, अमृतसर में उन्होंने ईसाई मत के दोष दिखाए तो पादरियों ने खड्गसिंह को बुलाया कि स्वामीजी के आक्षेपों का जवाब दे। खड्गसिंह बारह वर्ष से ईसाई हो चुका था और ईसाई मत का प्रसिद्ध प्रचारक था।

अमृतसर आते ही खड्गसिंह सीधा स्वामी जी के स्थान पर पहुंचा और झट आर्य हो गया। ईसाइयों से फिर मिला ही नहीं। पादरी महाशय मुंह ताकते रहे।

ऐसे ही और लोग भी, जो धर्म से पतित हो चुके थे, स्वामी जी का उपदेश सुनकर फिर आर्य-धर्म की शरण में आए।

2. उन्हीं दिनों मिशन स्कूल में पुनर्जन्म पर संवाद हुआ। मास्टर ज्ञानचन्द्र वहां अध्यापक थे। अपने आर्य-सिद्धान्त की पुष्टि की कि जीव मरकर फिर जन्म पाता है और पहले भी इसी प्रकार जन्म पाता रहा है। बात सच्ची थी पर ईसाइयों के अनुकूल न थी, इस पर आपको स्कूल छोड़ना पड़ा। आपने दुकान खोल ली, पर धर्म न छोड़ा।

शिक्षाः नौकरी छोड़ो, पर धर्म न छोड़ो।

रुड़की में स्वामीजी के व्याख्यान में एक मज़हबी सिख जा बैठा। मज़हबी सिख वे होते हैं जो अपने हाथ से पशुओं को मारते हैं। वे लोग अशुद्ध समझे जाते हैं। किसी ने उससे घृणा कर उसे पहले स्थान से उठा दिया। वह किसी दूसरे स्थान पर जा बैठा। यहां फिर किसी ने उठा देना चाहा। इस पर स्वामीजी ने रोका और कहा–बैठने दो, धर्म की बात है, इसे सब सुन सकते हैं। जैसे वायु सबकी है, वैसे वेद भी सबका है। जैसे सूर्य की ज्योति सबकी हैं, वैसे ही वेद भी सबका है।

कर्णवास के ठाकुर गोपालसिंह जी भी आपके शिष्य थे। उनकी ताई इक्यानवें वर्ष की बुढ़िया थी। कई गांव उनके अधिकार में थे, परन्तु वे खाती जौ की ही रोटी थीं। वे स्वामीजी के दर्शन को आई। उन्होंने पूछा, ''मेरी मुक्ति क्योंकर हों ?'' स्वामी जी ने गायत्री का उपदेश दिया और कहा कि इस मन्त्र का जाप किया करो। यह मन्त्र आर्य-धर्म का सार है।

शिक्षा–वेद का अधिकार छोटे-बड़े, स्त्री-पुरुष सबको है।

संवत् 1935 वि० फिर हरिद्वार में कुम्भ का मेला हुआ। स्वामीजी ने फिर वहां डेरा जा लगाया। प्रातः काल लोग 'हर की पैड़ी' पर स्नान करते, सायंकाल स्वामीजी की कुटी पर भीड़ रहती। वहां शरीर शुद्ध होता है, यहां आत्मा की शुद्धि हो जाती।

1. आनन्दवन नाम के एक विद्वान संन्यासी था। वे शिष्यों सहित स्वामीजी की सेवा में आए। पहले थे जीव और परमात्मा को एक मानते थे। स्वामीजी के साथ विचार हुआ तो उन्हें निश्चय हो गया कि जीव और है, ब्रह्म (परमात्मा) और। जीव हम हैं जो थोड़ा जानते, थोड़ा कर सकते, थोड़े में रहते हैं। परमात्मा सब कुछ जानता, सब-कुछ कर सकता और सब जगह रहता है। कितना भेद है ? यही शिक्षा स्वामी जी ने आनन्दवन को और आनन्दवन ने अपने शिष्यों को दी।

2. दो नागे स्वामीजी के स्थान पर आए और स्वामीजी को गालियां देने लगे। स्वामीजी हंसे और उन्हें बड़े प्रेम से अपने पास बुलाया। दूसरे दिन वे भक्ति से आए और शिक्षा ली। तब से वे कपड़े पहनने लगे और उन्होंने माला आदि तोड़ दी।

शिक्षा–प्रेम से शत्रु भी मित्र बन जाता है।

बरेली में भाषण देते हुए स्वामी जी ने कहा था कि महात्मा ईसा की मां कुंवारी न थी। जिसके बेटा हुआ वह कुंवारी कैसे रही ? कमिश्नर महोदय भाषण में आए थे, वे ईसाई थे। उन्हें यह सच बात बुरी लगी।

स्वामीजी खज़ांची की कोठी पर उतरे थे। कमिश्नर ने खज़ांची से कहा कि स्वामीजी को समझाएं। खज़ांची स्वामीजी के पास इस काम के लिए आते हुए ही डरता था। अंत को उन्होंने स्वामीजी से बड़ी नम्रतापूर्वक यह बात कही, पर स्वामी जी ताड़ गए कि कमिश्नर ने कल की बात का बुरा माना है।

दूसरे दिन फिर व्याख्यान में कमिश्नर महाशय आए। स्वामीजी ने ललकार कर कहा– कोई रूठे चाहे माने, मुझे सत्य कहना है– राव से भी सत्य कहना है, रंक से भी सत्य। पहले मुझे निश्चय करा दो कि कोई मेरी आत्मा को मार सकता है। फिर मैं सोचूंगा कि क्या सच को छिपाऊं।

शिक्षा–सच कहने में डर किसका ?

इस समय स्वामीजी की प्रतिष्ठा का क्या ठिकाना था! स्थान-स्थान पर समाज खुल गए। अनेक लखपति भक्त बन गए। जहां आंखें उठाएं, राजा लोग हाथ बांधे सेवा पूछते थे। फिर भी स्वामीजी की सरलता देखो। न मन में अभिमान आया और न शरीर ही आलसी हुआ। उल्टा प्राणी-मात्र से प्रेम बढ़ गया और काम पहले से भी अधिक करने लगे।

अब अंतिम बार काशी गए, तो एक दिन सैर से लौटते हुए एक गाड़ी देखी जो कीचड़ में धंस गई थी। बैल भी वहीं फंसे खड़े थे। गाड़ीवाला सोटे पर सोटा बरसा रहा था, पर बैल हिलने में ही नहीं आते थे। स्वामी जी को बड़ा दुःख हुआ। स्वयं कीचड़ में उतरे। बड़े आदमी थे, परन्तु उपकार के कामों में बड़ाई का क्या काम ? जो काम बैलों की दोहरी शक्ति न कर सकती थी वह अकेले एक ब्रह्मचारी की भुजाओं ने सहज में कर दिया। स्वामीजी ने स्वयं गाड़ी को खींच झट कीचड़ से बाहर किया। धन्य स्वामिन्, धन्य!

गोरक्षा के लिए आपने बड़ा यत्न किया। गवर्नरों से मिले, अनेक अंग्रेजों और मुसलमानों को गोरक्षक बनाया, पुस्तकें लिखीं, प्रजा में प्रचार किया।

शिक्षा–प्राणी-मात्र पर दया करो।

राजपूताने में स्वामी जी पहले कई बार पधारे थे–पुष्कर में प्रचार किया था, और जगहों में भी गए थे। राजा, प्रजा को धर्म की शिक्षा दी थी। अब वहां इस उद्देश्य से पहुंचे कि वहां के राजाओं को आर्य बनाएंगे। उदयपुर, जोधपुर, आदि के राजा आपके शिष्य बन गए और जैसी आज्ञा पाई वैसा ही आचरण करने लगे। स्वामी जी कुछ अधिक समय वहां रहते तो सब सुधर जाते।

गद्दी की भेंट-उदयपुर के राजा ने एक बार अकेले में विनती की कि स्वामिन् ! मेरा राज महादेव के मन्दिर के अधीन है। यदि आप मूर्ति का खण्डन छोड़ यहां के महन्त बन जाएं, तो कई लाख की जागीर उस मन्दिर के साथ है, वह आपकी होगी और राज्य के भी धार्मिक अधिराज आप होंगे। स्वामी जी चुपके-चुपके सुनते रहे। जब राजा की बात समाप्त हुई तो मुंह लाल हो गया। क्रोध में आकर कहा:

''राजन्, तुझे राजा होने का अभिमान है ? तेरी रियासत से मैं एक दौड़ में पार हो सकता हूं फिर तूं मेरा क्या करेगा ? मैं परमात्मा के राज्य को कैसे छोड़ूं ? जो सब जगह है, उससे कैसे निकलूं ? वह सर्व-शक्तिमान् है। वह सब कुछ कर सकता है। मैं उसकी आज्ञा मानूं या तेरी!''

राजा यह खरी बात सुनकर चुप था। बोला, ''मैंने तो परखने की बात बनाई थी। पर आप धन्य हैं! आपको न लोभ गिरा सकता है, न भय।''

शिक्षा–धन छोड़ो, धर्म न छोड़ो।

कवि श्यामदास ने बातों-बातों में कहां, ''स्वामिन्! आपने कितना उपकार किया! जी चाहता है प्रातः सायं आपका दर्शन करें। आप कहीं चले जाते हैं तो आपके सेवक आपकी मोहिनी छवि को तरसते हैं। आपका स्मारक (यादगार) होना चाहिए, अर्थात् मूर्ति (स्टेचू) बनाई जाए। उससे जहां आपके भक्त दर्शन पाएंगे, वहां प्रजा को कई प्रकार की शिक्षा मिलेगी।''

आपने उत्तर दिया–''नहीं, मरने के पीछे मेरी भस्म को भी किसी खेत में डालना ताकि खाद के काम आए. इन स्मारकों से ही मूर्ति-पूजा चली है। मेरी मूर्ति बनवाकर उसे भी पुजवाना है क्या ?''

शिक्षा–काम रहेगा, नाम न रहे तो कोई बात नहीं।

राजपूताने में जगह-जगह चबूतरे बने हुए हैं। उन्हें देवता का स्थान समझकर पूजा जाता है। चबूतरे पर वृक्ष भी होता है, जैसे यहां पीपल। एक चबूतरे के आगे जाते हुए ऋषि का सिर झुक गया।

किसी ने कहा–''आप देवता को मानें या न मानें देवता ने स्वयं सिर झुकवा लिया है।''

स्वामी जी ठहर गए। वहीं कुछ बच्चे खेल रहे थे, उनमें एक लड़की थी। स्वामी जी ने उसकी ओर अंगुली की और कहा–''यह मातृ-शक्ति है, इसी से सब जन्म पाते हैं इसके आगे सबको झुकना चाहिए।'' यह सुनते ही सबके रोम खड़े हो गए, आदर से सबका सिर झुक गया।

शिक्षा–स्त्री-जाति, अर्थात् माता, बहिन, लड़की, धर्म-पत्नी तथा अन्य स्त्रियों का मान करो। ये मातृ शक्ति है।

जोधपुर जाते हुए किसी ने कहा था, ''स्वामीजी। यह गंवारों का देश है। लोग समझेंगे कुछ नहीं और मुफ्त में प्राण हर लेंगे।'' स्वामी जी ने उत्तर दिया– ''गंवारों को समझाना ही तो मेरा मुख्य काम है। तुम कहते हो, वे मार डालेंगे। यदि वे मुझे जीते हुए की एक-एक अंगुली को काट लें और उसे जलाकर उसने बत्ती का काम लें तो मेरा जीवन सफल होगा।''

स्वयं राजा ने ऋषि को बुलाया था। स्वामीजी वहां गए तो वह शिष्य बन गया और उनसे राजधर्म की शिक्षा लेने लगा। धीरे-धीरे उसका आचार भी सुधरने लगा।

स्वामीजी ने सुना कि राजा ने एक वेश्या रखी हुई है। एक दिन दरबार में वेश्या की पालकी दिख गई। स्वामीजी से न रहा गया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि–शेर के लिए कुतिया का संग बहुत बुरा है। फिर पत्र लिखकर भी समझाया।

राजा पर तो इस डांट-डपट का प्रभाव अच्छा पड़ा, वह वेश्या से विमुख हो गया, पर वेश्या झट स्वामीजी की बैरिन हो गई। उसने कई राज-मन्त्रियों को अपनी तरफ गांठा और एक शत्रु-मण्डली सी बना ली। उसकी सलाह हुई कि स्वामीजी को विष दिया जाए।

स्वामीजी के पाचक (रसोइये) को रुपया देकर उससे विष दिलवाया गया। स्वामीजी को विष चढ़ गया और वे रोगी हो गए। गज़ब यह था कि जो डाक्टर औषधि देने को आया, वह भी उसी शत्रु-मण्डली से मिला हुआ था। स्वामीजी का हाल दिनों-दिन बिगड़ता गया। दिन में बीसियों दस्त आते थे। शरीर दुर्बल हो गया। क्षण-क्षण में मूर्छा आने लगी। पेट से लेकर मुख तक शरीर के भीतर और बाहर सारे शरीर पर छाले हो गए। न बोला जाता था, न सांस ही लिया जाता था; कष्ट का कुछ ठिकाना ही न था।

वैद्य अचम्भे थे कि ये जी किस तरह रहे हैं। स्वामीजी का दिल देखना, महीना-भर से कुछ ऊपर इस हालत में रहे, पर हाय तक नहीं की। चुपचाप सब सह गए।

जोधपुर से आबू आए तो पालकी पर, वहां से अजमेर गए तो पालकी पर। अजमेर में एक दिन हजामत कराई, शरीफ साफ कराया। उठकर प्रार्थना की। कुछ देर वेदमंत्रों का पाठ करते रहे। अन्त को यह कहा, ''ईश्वर! तेरी इच्छा पूर्ण हो'' और प्राण छोड़ दिए। उस समय स्वामीजी की आयु उनसठ वर्ष की थी।

शिक्षा–कष्ट से हाय-हाय न करो, उसे सह जाओ। मृत्यु आए तो हंसते हुए उसका स्वागत करो।

कई वर्ष हुए, स्वामीजी को मारने वाला प्रकट हुआ था। उसने बताया कि स्वामी जी को इस बात का पता था कि मैंने ही विष दिया है। मैंने उनके सामने अपना अपराध माना और पांवों पर गिरकर प्रार्थना की–''क्षमा कीजिए। मारा तो मैं जाऊंगा ही। यदि आप क्षमा कर दें तो सन्तोष से मरूंगा।'' स्वामीजी ने मुझे उठाकर अपने हाथों से पानी पिलाया और रुपये देकर कहा, ''ले, नेपाल देश भाग जा। वहां तुझे कोई न' पकड़ेगा। मुझे विष धीरे-धीरे चढ़ेगा, सो किसी को शंका न होगी।'

स्वामीजी की वीरता देखना कि मरते दम तक यह भेद किसी को न बताया। यह क्षमा की पराकाष्ठा है। संसार-भर में और भी महापुरुष हुए हैं, परन्तु किसी ने ऐसी क्षमा नहीं दिखाई।

मारने वाले का नाम जगन्नाथ था। वह नेपाल चला गया। फिर भारतवर्ष लौट आया और भगवा वेश में यहां घूमता रहा। परन्तु अब बिलख-बिलखकर रोता था। उसे दुःख था कि– हाय! मैंने कैसे महात्मा की जान ली। मैंने उन्हें विष दिया और उन्होंने मुझे जीवन प्रदान किया।

शिक्षा–ऋषि दयानन्द की दया जैसी और दया नहीं। ऐसी दया धारण करो।

स्वामीजी यहां से गए, पर उनकी शिक्षा इसी लोक में जीती है।

आओ! हम सच्ची शिक्षा को धारण करें और सारे संसार में स्वामीजी के उपदेशों का प्रचार करें। स्वामी जी हमारे लिए मरे। हम उनके काम के लिए जिएं।

शिक्षा–यदि हम स्वामी जी जैसे काम करें तो हम भी वैसे ही स्वामी बन सकते हैं।

॥ ओ३म् ॥

अन्धन्तमः प्रविशन्ति ये ऽसम्भूतिमुपासते।

ततो भूय इ वते तमो य उ सम्भूत्यां रताः ।। य.40/3

जो ईश्वर के स्थान पर कारण रूप और कार्यरूप प्रकृति की पूजा करते हैं वह घोर अंधकार में गिरते हैं।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

दोआबा आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, नवांशहर

(स्थापित–1911)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) गुरुदत्त भवन,
किशनपुरा चौक, जालन्धर द्वारा संचालित
अपने गौरवमय इतिहास को पुनर्जीवित
करने के लिये दृढ़ संकल्पिक
निरन्तर प्रगति की
ओर अग्रसर

विशेष आकर्षण

सुन्दर, विशाल भवन, भव्य पुस्तकालय, अत्याधुनिक कम्प्यूटर शिक्षा, शानदार परीक्षा परिणाम, अनुभवी तथा योग्य अध्यापक, नैतिक, सांस्कृतिक व धार्मिक शिक्षा, विशाल क्रीड़ा क्षेत्र, खेलों की आधुनिक प्रयोगशालाएं, समस्त भव्य सुविधाओं से परिपूर्ण

अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिये तुरन्त सम्पर्क करें।

जिया लाल शर्मा	ललित मोहन पाठक	कुलवन्त राय	राजेन्द्र सिंह गिल
प्रधान	उप प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म्॥

उत्क्राम महते सौभगाय।

य. 11/21

हे मनुष्य ! महान ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये आगे बढ़।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज, राहों रोड, नवांशहर

WebSite: www.blmgirlscollege.com, email:blmcollege@yahoo.com
Phone No. 01823-220026, Fax: 01823-221474

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

प्रमुख विशेषताएं

1. अनुभवी एवं उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
2. शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
3. गरीब वर्ग की छात्राओं के लिये विशेष सुविधा।
4. एम.ए. (राजनीति विज्ञान, हिन्दी), पी.जी.डी.सी.ए., बी.ए., बी.कॉम, बी.एस.सी., ड्रैस डिजाइनिंग डिप्लोमा (U.G/P.G), कॉस्मोटॉलोजी डिप्लोमा (U.G/P.G) आदि कोर्स की व्यवस्था।
5. खेलों की उचित व्यवस्था (गत वर्षों से हैंड्बाल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस में विश्वविद्यालय स्तर पर प्रथम एवं द्वितीय स्थान)

❖❖❖❖❖❖

अपनी लड़कियों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें नैतिक शिक्षा व उच्च शिक्षा को प्राप्त कराने के लिये सम्पर्क करें।

डा.सी.एम.भण्डारी	विनोद भारद्वाज	मीनाक्षी शर्मा
प्रधान	सचिव	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

संसमिद् युवसे वृषन्नग्ने विश्वायर्न्य आ।
इडस्पदे समिध्यसे न नो वसून्याभर॥ १ ।।

हे सुखो के वर्षक, सबके स्वामी, प्रकाश स्वरूप परमात्मन्! आप संसार के सब पदार्थों की उचित व्यवस्था के अनुसार परस्पर मिलाते हो, और फिर उनका वियोग भी आप ही करते हो, आप अपनी शक्तियों से इस धरती पर चमक रहे हो, हे ऐसे महान् सामर्थ्य वाले भगवान ! आप हमें सब प्रकार के ऐश्वर्य दीजिए।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर.के. आर्य कालेज नवांशहर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

दीपावली के शुभ अवसर पर, प्रबन्धकर्तृ सभा के सदस्य, प्राध्यापकगण, प्रिंसीपल और विद्यार्थी सभी आर्य बन्धुओं व बहिनों को हार्दिक बधाई भेंट करते हैं।।

नवांशहर के क्षेत्र में उच्च शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र। खेलों का समुचित प्रबन्ध व खुले मैदान, धार्मिक, नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान, चरित्र निर्माण पर विशेष बल।

अपने बच्चों के सर्वतोमुखी विकास के लिये, उनके चरित्र निर्माण के लिये, धार्मिक व नैतिक शिक्षा के लिये और उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें ***आर.के. आर्य कालेज नवांशहर*** में प्रवेश करवायें।

देशबन्धु भल्ला एडवोकेट	सोहन सिंह	जे.के.दत्त	एस.के. बारिया
प्रधान	उपप्रधान	सैक्रेटरी	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

अस्मासु भद्र द्रविणानि धत्त।

(कल्याणकारी ऐश्वर्य धन हम सब को प्राप्त हो)

न त्वहं कामयेत राज्यम् न सुखम् न पुनर्भवम्।

कामयेत दुख तप्तानाम् प्राणिनामार्तिनाशनम् ॥

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

❖❖❖

डी.ए.एन.आर्ट एंड क्राफ्ट (A.C.T) कालेज नवांशहर

❖❖❖

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में

निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. नवांशहर क्षेत्र में आर्ट्स एंड क्राफ्ट का एक मात्र कालेज
2. अनुभवी तथा ट्रेंड स्टाफ।
3. सुसज्जित मैदान।
4. शानदार पेटिंग सिखाने का प्रबन्ध।
5. सभी प्रकार की आधुनिक विद्याओं से युक्त।
6. बोर्डिंग का उचित प्रबन्ध
7. शत्-प्रतिशत् परीक्षा परिणाम।

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की ओर विशेष ध्यान

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें।

विनोद भारद्वाज	बख्तावर सिंह	विपिन तनेजा	आशा शर्मा
प्रधान	**उपप्रधान**	**सैक्रेटरी**	**प्रिंसीपल**

॥ ओ३म् ॥

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते॥

(सब प्रकार के ऐश्वर्य के अभिलाषी) हे मनुष्यो, तुम परस्पर मिल कर चलो, मिल कर बातचीत करो, ज्ञानी बन कर तुम अपने मनो को भी एक बनाओ, जैसे कि तुम से पहिले विद्वान देव पुरुष सम्यक् ज्ञान वान् और एक मति वाले होकर अपना भाग प्राप्त करते रहे हैं।

☆☆☆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डब्ल्यू.एल. आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल नवांशहर

☆☆☆

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संरक्षण में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

☆☆☆

1. *अनुभवी तथा उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।*
2. *नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा पर विशेष बल।*
3. *अच्छे परीक्षा परिणाम, सुन्दर भवन, हवादार कमरे।*
4. *आधुनिक विशेषताओं से युक्त पाठ्यक्रम में देश भक्ति व सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेश।*

अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य और आदर्श शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

ललित मोहन पाठक	**ललित शर्मा**	**अरुणेश कुमार**	**आरती कालिया**
प्रधान	उपप्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ओ३म् ॥

न वा उदेवा: क्षुधमिद् वधं ददु:, उताशितमुपगच्छन्ति मृत्यव:।

उतो रयि: पृणतो नोपदस्यति, उतापृणन् मर्डितारं न विदन्ते॥ (ऋ. 10/117/1/11)

देवों ने न केवल भूख दी भूख के रूप में मौत दी है, अपितु खाते पीते अमीर को भी नाना प्रकार से मौत आती है और देने वाले की धन-सम्पत्ति क्षीण कभी नहीं होती अपितु जो दान न देने वाला है, वह कभी भी किसी सुख को प्राप्त नहीं करता अपितु दान देने वाला सुख को प्राप्त होता है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डा. आसानन्द आर्य माडल सी.सै.स्कूल नवांशहर

विशेषताएं

☆☆☆

1. *शिशुशाला से +2 तक नियमित कक्षाएं और सुयोग्य एवं प्रशिक्षित स्टाफ।*
2. *धार्मिक शिक्षा।*
3. *कम्प्यूटर शिक्षा।*
4. *हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम से पाठ्यक्रम का पठन-पाठन।*
5. *विशाल क्रीडा क्षेत्र।*
6. *सुन्दर भवन।*
7. *हरे-भरे वृक्ष।*
8. *उचित जल एवं विद्युत व्यवस्था।*
9. *हवादार कमरे आदि विशेषताओं से सम्पन्न है।*

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की छत्रछाया में उन्नति के पथ पर अग्रसर

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

वीरेन्द्र सरीन	ललित कुमार शर्मा	अचला भल्ला	सतीश कश्यप
प्रधान	प्रबन्धक	डायरैक्टर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

तमीडत प्रथमं यज्ञसाधं विश आरीराहुतमृंजसानम्

ऊर्जः पुत्रं भरतं सुप्रदातुं देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम ॥ (ऋ. 1/7/3/3)

जो परमात्मा सब जगत् का आदिकारण, वेदविहित कर्मों से प्राप्त होने योग्यं, सबका अधिष्ठाता तथा पूजनीय है और जिसको विद्वान लोग प्रकाश तथा नम्रता का देने वाला, जगत् का दुःख हर्ता, धारण पोषणकर्त्ता, ज्ञान तथा क्रिया शक्ति आदि उत्तम पदार्थों का देने वाला मानते हैं, उसी की सब को स्तुति करनी चाहिये, अन्य की नहीं। (आर्याभिविनय)

- महर्षि दयानन्द

◆◆◆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

◆◆◆

हार्दिक शुभकामनाएं

◆◆◆

डी.ए.एन कालेज आफ एजुकेशन फार विमन नवांशहर

❑ निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर ❑

विशिष्टताएं

सुयोग्य प्राचार्य व प्राध्यापकगण, बृहद पुस्तकालय, सांस्कृतिक गतिविधियां, नैतिक व धार्मिक शिक्षा पर बल, कम्प्यूटर और होस्टल सुविधाएं उपलब्ध व समस्त आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण। नये सत्र के लिये अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

◆◆◆

विनोद भारद्वाज	एस.के.बरूटा	डा. सरोज भल्ला
प्रधान	सचिव	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि।

(ऋग्वेद. 1/4/6)

हम सदा परमेश्वर की शर्मणि–शरण में रहें।

★★★

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य कालेज लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. शहर के मध्य में स्थित।
2. अनुभवी व उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
3. हवादार कमरे, खेलने के लिये खुला मैदान।
4. लड़के, लड़कियों के लिये पढ़ाई की अलग अलग व्यवस्था।
5. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
7. सभी तरह की विशेषताओं से युक्त पुस्तकालय व प्रयोगशाला।

अपने बच्चों का उज्जवल भविष्य बनाने के लिये इस कालेज में प्रवेश करवायें।

सम्पर्क करें

देवेन्द्र नाथ शर्मा	विजय सरीन	डा. रमेश चन्द्र तेजपाल
प्रधान	सैक्रेटरी	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।

दूरगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं, तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥20॥

भावार्थ- हे प्रभो! मेरा दिव्य शक्ति वाला जो मन जागते हुये का व सोते हुये का दूर दूर तक जाता है अर्थात् चिन्तन करता है, जो सभी ज्ञान-साधक इन्द्रियों का प्रधान ज्योति प्रकाशक है, वह मेरा मन आपकी कृपा से शुभ विचारों वाला होवे।

★★★

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. समृद्ध स्वामी दयानन्द पुस्तकालय।
2. अनुभवी, लग्नशील, मेहनती, सुयोग्य, ट्रेंड स्टाफ
3. स्कूल में पानी की उत्तम व्यवस्था के लिये प्रबन्ध।
4. अच्छे परीक्षा परिणाम तथा गत वर्ष की अपेक्षा विद्यालय में छात्रों की संख्या में वृद्धि।
5. प्रति वर्ष विद्यार्थियों की भलाई व कल्याण के लिये एजुकेशनल टूर ले जाने का निर्णय।
6. आर्थिक अनियमितताओं को दूर करने के लिये प्रयासरत
7. प्राइमरी विंग के बच्चों के लिये खेलने की विशेष सुविधा।
8. खेलों के क्षेत्र में प्रथम आने वाले विद्यार्थियों के प्रोत्साहन के विशेष प्रबन्ध।
9. विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार व प्रसार के लिये स्कूल में धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

मुनीष मदान	**विनोद गांधी**	**विजयपाल**
प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

सख्ये ते इन्द्र याजिनो मा भेम शवसस्पते।
त्वामभि प्रणोनुमो जेतारमपराजितम।।

भावार्थ: प्रभु के भक्तों में ऐसा विलक्षण बल आता है कि वे किसी से भी डरते नहीं क्योंकि जिनका रक्षक स्वयं प्रभु होवे, उनको डराने वाला कौन हो सकता है? वहीं प्रभु सदा अपराजित और हमेशा विजयी है इसलिये उसी को नमन करने योग्य है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य गर्ल्ज सी. सै.स्कूल, पुराना बाजार, दरेसी रोड लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में शहर की एक सौ दस वर्ष पुरानी संस्था

प्रमुख विशेषताएं

1. नर्सरी कक्षा से बारहवीं कक्षा तक गणित व विज्ञान विषयों के लिये **Smart Classes** की विशेष व्यवस्था।
2. अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम में पढ़ाने का उचित प्रबन्ध।
3. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ
4. स्वच्छ जल हेतु फिल्टर, बिजली के लिये जनरेटर, अग्निशमन यंत्रों इत्यादि सभी आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न
5. सत्र 2012-13 में बोर्ड परीक्षाओं का शत प्रतिशत परिणाम।
6. गत वर्ष की अपेक्षा छात्राओं की संख्या में वृद्धि।
7. कम्प्यूटर प्रशिक्षण का विशेष प्रबन्ध।
8. भव्य भवन खुले व हवादार कमरे, समृद्ध पुस्तकालय व सुसज्जित साईंस लैब।
9. छात्राओं की ज्ञान वृद्धि के लिये शैक्षणिक भ्रमण पर ले जाने की व्यवस्था।
10. सांस्कृतिक व सह सहायक गतिविधियों का आयोजन
11. **Morning Assembly** में नैतिक मूल्यों व अच्छे संस्कारों को सुदृढ़ करने पर विशेष चर्चा।
12. प्रबन्धकृर्त सभा के सभी सदस्य संस्था को प्रगति के पथ पर ले जाने के लिये निरन्तर प्रयासरत।

विशेष नोट: जरूरतमंद व योग्य छात्राओं के लिये निशुल्क पुस्तकें, वर्दियां, स्वैटर व जूते।

अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य व सर्वांगीण विकास के लिये सम्पर्क करें।

सुशील मोदगिल	जयप्रकाश	रवि महाजन	राजेश शर्मा	ज्योति किरण शर्मा
प्रधान	उपप्रधान	उप प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु, शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।
शमभिशाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवा शं नो अप्याः॥

भावार्थ- हे प्रभो! आपकी कृपा से दिव्य गुण कर्म स्वभाव वाले साधारण जन, विविध प्रकार के देने वाले दाता जन एवं द्युलोक, पृथिवी लोक और अंतरिक्ष लोक से सम्बन्ध दैवी शक्तियां हमारे लिये कल्याणकारी हों।

★★★

दीपावली (ऋषि निर्वाण दिवस) के पावन पर्व पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

दयानन्द पब्लिक स्कूल

दीपक सिनेमा रोड, लुधियाना

(पंजाब शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त)

प्री-नर्सरी से बारहवीं कक्षा तक इंग्लिश/ हिन्दी मीडियम, पंजाबी पढ़ाने का उत्तम प्रबन्ध

विशेषताएं

1. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ।
2. आर्ट्स,क्राफ्ट एवं कम्प्यूटर का समुचित प्रबन्ध।
3. चरित्र निर्माण व धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
4. शीतल पेय जल के लिये वाटर कूलर का प्रबन्ध।
5. विद्युत जेनरेटर तथा कैंटीन की उत्तम सुविधा।
6. खेलने के लिये खुला मैदान।
7. शानदार बोर्ड परीक्षा परिणाम।
8. उत्तम पुस्तकालय की सुविधा

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें।

संत कुमार आर्य	मुनीष मदान	सुनीता मलिक
प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

महो अर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना ऋ. 1/3/12

ज्ञानमयी वेद वाणी अपने ज्ञान से ही बड़े भारी ज्ञान सागर का उत्तम रीति से ज्ञान कराती है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व

के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संरक्षण में

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला से सम्बन्धित संस्था

श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला

में एल.बी.एस. कॉलजिएट सी.सै.स्कूल के अधीन +1, +2 के साथ स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की स्तरीय शिक्षा का प्रबन्ध है।

बी.ए.कक्षाओं में हिन्दी साहित्य, पंजाबी, पंजाबी साहित्य, अंग्रेजी, अंग्रेजी साहित्य, संस्कृत, इक्नामिक्स, राजनीतिक शास्त्र, इतिहास, पब्लिक, एडमिनिस्ट्रेशन, कम्प्यूटर एप्ली, फाईन आर्ट्स, गणित, साइकॉलॉजी, संगीत (कंठ्य), होम साईंस, फिजीकल एजुकेशन, ऑफिस मैनेजमेंट, फैशन डिजाइनिंग विषय पढ़ाये जा रहे हैं।

स्नातकोत्तर स्तर पर एम.ए.पंजाबी, एम.ए. इतिहास, एम.एस.सी.-आई.टी. एवं पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन कम्प्यूटर एप्ली. एम.एस.सी. फैशन डिजाइनिंग एवं पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन ड्रैस डिजाइनिंग, पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन कास्मेटॉलॉजी की कक्षाएं सफलतापूर्वक चल रही हैं।

इनके साथ बी.सी.ए., बी.बी.ए. तथा बी.कॉम के शिक्षण का भी प्रबन्ध है।

विशेषताएं

1. वातानुकूलित विशाल पुस्तकालय
2. बहुद्दश्यीय विशाल सभागार
3. सुविधा सम्पन्न छात्रावास।
4. वाई फाई प्रांगण।
5. सी.सी.टी.वी. कैमरों से लैस प्रांग्रण।
6. उच्च तकनीकी युक्त वातानुकूलित कम्प्यूटर प्रयोगशाला।
7. जैनरेटरों एवं वाटर कूलरों (आर.ओ.)
8. एन.सी.सी.फैशन डिजाइनिंग का सुचारू प्रबन्ध।
9. गांवों से छात्राओं को लाने ले जाने हेतु बसों का उचित प्रबन्ध।

शैक्षिक एवं शिक्षेत्तर उपलब्धियों के लिये पंजाबी विश्वविद्यालय में अपनी विशेष पहचान रखने वाली संस्था

डा.सूर्यकांत शोरी	भारत भूषण मैनन एडवोकेट	केवल जिन्दल	डा.नीलम शर्मा
प्रधान	महासचिव	उपप्रधान	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

देवत्तं ब्रह्म गायत।

ऋग्वेद 1/37/4

ईश्वर प्रदत्त वेद का सदा गान करो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

❖

हार्दिक शुभकामनाएं

❖

आर्य माडल स्कूल, बरनाला

❖

विश्व गुरु स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के पद्चिन्हों पर चल कर अपना मानव जीवन सफल बनायें तथा राष्ट्र को सही दिशा दें।

❖

विशेषताएं

1. योग्य, परिश्रमी और अनुभवी अध्यापक वर्ग।

2. प्रबन्धक समिति के शिक्षित और दूरदर्शी सदस्यों द्वारा पूर्ण सहयोग।

3. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विशेष ध्यान।

4. खेलों के साथ साथ सह पाठ्यक्रम क्रियाओं के प्रति विशेष ध्यान।

5. शिक्षण विकास की परीक्षा हेतु समयानुसार परीक्षाएं।

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें आर्य माडल स्कूल बरनाला में दाखिल करवाये।

सम्पर्क करें

हरमेल सिंह जोशी	भारत भूषण मेनन	राजेश कुमार गांधी	उर्मिल सिंगला
प्रधान	*मैनेजर*	*सैक्रेटरी*	*प्रिंसीपल*

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

(महर्षि दयानन्द)

☆☆☆

ऋषि निर्वाण दिवस एवं दीपावली के

पावन पर्व पर

गांधी आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल बरनाला

☆☆☆

की ओर से सभी को हार्दिक शुभ कामनाएं।

स्कूल की मुख्य विशेषताएं :-

- सभी कक्षाओं के शत-प्रतिशत परिणाम।
- उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग।
- खुले तथा हवादार कमरे।
- वैदिक धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
- अन्य सह-क्रियाओं में छात्रों का रचनात्मक सहयोग।
- अनिवार्य कम्प्यूटर शिक्षा।
- खेलों का उचित प्रबन्ध।
- बिजली पानी का उचित प्रबन्ध।

प्रेम कुमार बांसल एडवोकेट
प्रधान

भारत भूषण मैनन एडवोकेट
उप प्रधान

संजीव शोरी
मैनेजर

भारत मोदी
सचिव

प्रो. सुमन अग्रवाल
कार्यकारी प्रिंसीपल

डा. एच.कुमार कौल
डायरैक्टर

॥ ओ३म् ॥

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

भावार्थ : हे प्रभु हमें अंधकार से हटा कर प्रकाश की ओर ले चलो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

दयानन्द केन्द्रीय विद्या मंदिर, बरनाला

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. शहर के मध्य में स्थित विशाल भवन।
2. उच्च शिक्षित, अनुभवी तथा निष्ठावान अध्यापक।
3. सांस्कृतिक गतिविधियां तथा शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन
4. बोर्ड की दसवीं की परीक्षा (2012) में प्रिया ने पंजाब में सोहलवां तथा जिला बरनाला में पहला स्थान प्राप्त करके नाम रोशन किया।
5. चरित्र निर्माण व धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
6. फिल्टर पानी का प्रबन्ध और साइलेंट जेनरेटर।
7. बच्चों के लिये प्राथमिक सहायता उपलब्ध।
8. बच्चों के लिये हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों ही माध्यम उपलब्ध।

☆☆☆

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें

☆☆☆

भारत भूषण मैनन प्रधान

भारत मोदी उप प्रधान

पवन सिंगला उपप्रधान

बसन्त शोरी मैनेजर

संजीव शोरी सैक्रेटरी

वन्दना गोयल कार्यकारी प्रिंसीपल

अनीता मित्तल डायरैक्टर

॥ ओ३म् ॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतं, श्रुणुयाम शरदः शतं, प्रब्रवाम शरदः शतं, अदीनाः शरदः शतं,भूयश्च शरदः शतात् ॥9॥

भावार्थः हे प्रभो आप सबके मार्ग दर्शक हैं, विद्वानों के परम हितकारक हैं, आप तेजोमयी शक्ति हैं- हम सौ वर्ष तक आपको ज्ञान चक्षुओं से देखते रहें, सौ वर्ष तक आपके उपदेश को सुनते रहें, और दूसरों को सुनाते रहें, सौ वर्ष तक तथा इससे भी अधिक समय तक आपकी कृपा से हम स्वस्थ जीवन बिताएं और जन्म जन्मांतर तक आपका यश देखते सुनते रहें।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के शुभावसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बठिंडा

बालिकाओं का उज्जवल भविष्य बनाने वाली एक श्रेष्ठ संस्था

इसके मुख्य आकर्षण हैं:-

1. नगर के मध्य में स्थित
2. खुले हवादार कमरे।
3. कक्षा प्रथम (पहली) से +2 (आर्टस व कॉमर्स) तक शिक्षा में प्रति वर्ष शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
4. बच्चों को नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय शिक्षा देकर दृढ़ चरित्र-निर्माण व देशभक्त बनाने का प्रयास।
5. जरूरतमंद बच्चों के लिये पुस्तक व कोष व अन्य तरीकों से आर्थिक सहायता।
6. अनुशासन पर विशेष ध्यान।
7. विभिन्न उपायों से बच्चों के सर्वांगीण विकास पर सतत जोर देना।

इस प्रकार अनुभवी प्रबन्धक समिति, सुयोग्य प्रधानाचार्य व प्रशिक्षित स्टाफ के समुचित नेतृत्व व मार्ग दर्शन में दिन-प्रतिदिन उन्नति के सोपानों को पार करता हुआ यह विद्यालय आपके बच्चों का स्वर्णिम भविष्य निर्मित करने के लिये नगरवासियों की सेवा में प्रस्तुत।

"अपनी कन्याओं को प्रवेश दिलाएं, उन्हें योग्य, चरित्रवान व देशभक्त बनाएं।"

अनिल कुमार	निहाल चंद एडवोकेट	सुषमा कुमारी
प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

अस्मे धेहि जातवेदो महिश्रवः

ऋग्वेद: 1/97/4

हे ज्ञान स्वरूप प्रभो ! आप हम में उत्तम यश, धन और ज्ञान धारण करें।

ऋषि निर्वाण दिवस व दीपावली के पर्व पर सभी आर्य बन्धुओं और बहनों को स्कूल की प्रबन्धक समिति, प्रधानाचार्या एवं समस्त अध्यापकगण की ओर से

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य संस्कृति की गरिमा को समर्पित संस्था

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल एवं वैदिक कन्या पाठशाला औहरी चौक, बटाला

संस्था के विशेष आकर्षण

1. छात्राओं के सर्वांगीण विकास का जाना-माना शिक्षा संस्थान।
2. धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा का प्रबन्ध।
3. योग्य उच्चतम शिक्षा प्राप्त निष्ठावान तथा अनुभवी अध्यापक।
4. आधुनिक कम्प्यूटर लैब।
5. वाटर कूलर तथा ध्वनि रहित जनरेटर का उचित प्रबन्ध।
6. समृद्ध पुस्तकालय
7. साफ सुथरे उच्चस्तरीय कमरे।
8. आठवीं कक्षा तक के बच्चों को दोपहर के मुफ्त भोजन की सुविधा एवं मुफ्त पुस्तकें।
9. गर्ल्ज गाईड तथा बैंड व्यवस्था।
10. गरीब एवं योग्य छात्राओं को आर्थिक सहायता।
11. बोर्ड की कक्षाओं का शत प्रतिशत परिणाम तथा सैशन 2011-12 में दसवीं की दो छात्राओं तथा+2 की दो छात्राओं ने स्टेट मैरिट में स्थान प्राप्त किया।
13. कल्चर संगीत कार्यक्रम के लिये योग्य तथा अनुभवी शिक्षा का प्रबन्ध।

निरन्तर प्रगति की ओर नारी उत्थान में संलग्न संस्था

प्रविन्द्र चौधरी	अशोक कुमार अग्रवाल	विजय अग्रवाल	सोनिया सच्चर
प्रधान	उप प्रधान	मैनेजर	प्रिंसीपल

॥ ओ३म ॥

सत्पुरुषः सत्यप्रिय, धर्मात्मा, विद्वान, सब के हितकारी ओर महाश्सय होते हैं, सत्पुरुष कहलाते हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती

☆☆☆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य माडल सी.सै. स्कूल, बठिंडा

Ph.No. 0164-2238328

विशेषताएं:

1. नगर के मध्य स्थित।
2. योग्य, सुशिक्षित तथा अनुभवी स्टाफ।
3. विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष ध्यान।
4. शानदार परीक्षा परिणाम
5. नगर में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर
6. प्रदूषण व ध्वनि रहित जेनरेटर, R.O पानी आदि मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

☆☆☆

पी.डी गोयल एडवोकेट
प्रधान

रमेश कुमार गर्ग
उप-प्रधान

गौरी शंकर
मन्त्री

अश्विनी कुमार मोंगा
उप प्रधान

विपिन कुमार गर्ग
प्रधानाचार्य

॥ ओ३म् ॥

सत्पुरुष:- सत्यप्रिय, धर्मात्मा, विद्वान, सबके हितकारी और महाशय होते हैं, वे 'सत्पुरुष' कहाते हैं।

(महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के

पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

श्रीराम आर्य सी.सै.स्कूल पटियाला

मुख्य विशेषताएं

1. उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग
2. खुले तथा हवादार कमरे।
3. वैदिक धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर बल।
4. शानदार परीक्षा परिणाम
5. उच्च शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

वीरेन्द्र कौशिक
प्रधान

अश्विनी मेहता
मैनेजर

चन्द्रमोहन
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

ओ३म् अस्माकमिन्द्रः स्मृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्तु जयन्तु।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माकं उ देवा अवता हवेषु॥

(साम. अध्याय 22, खंड 4, मंत्र 2)

भावार्थः वीरों के बल से विजयी हम, फहरावें जय कीर्ति ललाम। देव हमारे धरती तल पर, प्राण पसारे जय वरदान। अमर शहीदों के पथ पर चल कर शान्ति का करें, प्रसार, शक्ति हमें दो भगवन ऐसी, वेद धर्म का हो विस्तार।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य सी.सै.स्कूल बस्ती गुजां,जालन्धर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. विशाल भवन।
2. खेल के मैदान।
3. हवादार कमरे।
4. शिक्षा को समर्पित अध्यापक वृन्द।
5. अहर्निश छात्र वर्ग के विकास के लिये कार्यरत।

अपने लड़के व लड़कियों को धार्मिक शिक्षा दिलवाने के लिये
शिक्षा शास्त्री बनाने के लिये,सर्वांगीण विकास के लिये
तथा उनका उज्जवल भविष्य बनाने के लिये
आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, बस्ती गुजां
जालन्धर में प्रथम श्रेणी से 10+2
तक की पढ़ाई के लिये
प्रवेश करवाएं।

सरदारी लाल आर्य	विशाल पुरुथी	श्रीमती सारिका
प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

परिमाग्ने दुश्चरितादवाध्स्व मा सुचरिते भज।

यजु. 4/28

हे प्रकाशमय प्रभो ! मुझे दुराचार से रोको और सच्चरित्र में प्रेरो

***

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

***

हार्दिक शुभकामनाएं

***

आर्य कन्या सी.सै.स्कूल, बस्ती नौ, जालन्धर

***

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति कीओर अग्रसर

विशेषताएं

विशाल भवन, हवादार कमरे, उच्च शिक्षित व शिक्षा को समर्पित स्टाफ, कन्याओं के विकास के लिये निरन्तरकार्यरत, नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।

***

अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य और आदर्श व उच्च शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

ज्योति शर्मा	**सुधीर शर्मा**	**मीनू कपूर**
प्रधान	प्रबन्धक	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

इमा ब्रह्मा सधमादे जुषस्व

ऋग्वेद 20/11/3

इन वेद वचनों को, हे विद्वन ! हर्षस्थान व सभा सदन में सेवो अर्थात बोलो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल पटियाला

❐ *आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर* ❐

संस्था के विशेष आकर्षण

1. पंजाब सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त।
2. नगर के मध्य में स्थित
3. 10+2 तक की शिक्षा (आर्ट्स व कामर्स ग्रुप) तदर्थ नये भवन के ब्लाक का विशेष प्रबन्ध।
4. पुस्तकालय, प्रयोगशाला एवं हवादार कमरों वाली इमारत।
5. बिजली,पानी आदि की मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था।
6. राष्ट्र प्रेम, धर्म व संस्कृति का आदर, भाइचारे की भावनाओं का विकास कर भारतीयता पर आधारित चरित्र निर्माण पर विशेष बल
7. आर्य समाज के दस नियम, गायत्री मंत्र, नैतिक व धार्मिक शिक्षा की परीक्षाओं की विशेष व्यवस्था।
8. कम्प्यूटर, संगीत व गृह-विज्ञान की शिक्षा का विशेष प्रबन्ध।
9. स्कूल के अति उत्तम शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
10. रैडक्रास, होम नर्सिंग, गर्ल गाईड की शिक्षा देकर विद्यार्थियों में सहायता का भाव उत्पन्न करना।
11. प्रधानाचार्य अनुभवी प्रतिभावान, सुशिक्षित व नगर में प्रतिष्ठित सुचारू प्रबन्ध कमेटी के योग्य निर्देशन में

अपने उच्च शिक्षित पूर्णतया योग्य अनुभवी स्टाफ के साथ मिल कर सफलतापूर्वक पाठशाला का संचालन कर रही है।

शिक्षा जगत में महकता हुआ चमन

सोम प्रकाश	शैलेन्द्र मेहता	किरण जिन्दल
प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

पंडितः- जो सत् असत् को विवेक से जानने वाला धर्मात्मा, सत्यप्रिय, विद्वान और सब का हितकारी है उसको पंडित कहते हैं।

-महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

***

हार्दिक शुभकामनाएं

***

डी.एन. माडल सी.सै. स्कूल मोगा

❒ विशेषताएं ❒

1. प्रशिक्षित एवं अनुभवी स्टाफ।
2. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
3. कम्प्यूटर कक्षाओं, पुस्तकालय एवं समृद्ध प्रयोगशालाओं का उत्तम प्रबन्ध।
4. गत वर्ष की उज्जवल उपलब्धियों, शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।

उच्च स्तरीय शिक्षा, सांस्कृतिक गतिविधियों और राष्ट्रीय निर्माण में क्षेत्र की सर्वश्रेष्ठ संस्था।

सी.बी.एस.ई. दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

सुदर्शन शर्मा प्रधान	देवेन्द्र नाथ शर्मा सैक्रेटरी	योगेश गोयल उपप्रधान
अश्विनी कुमार शर्मा ज्यायंट सैक्रेटरी	साथी विजय कुमार सदस्य	डा. सुरजीत मान कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव॥ (यजु. 30/3)

(सवित) हे संसार के उत्पन्न करने वाले, संसार पर शासन करने वाले, संसार को शुभ प्रेरणा देने वाले, (देव) दिव्यगुणयुक्त परमेश्वर! (विश्वानि) सब (दुरितानि) बुराईयों को, दुरवस्थाओं को (परा+सुव) दूर कीजिए। (यत्भद्रम्) जो भद्र [है] (तत् नः) वह हमें (आसुव) दीजिए।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

डी.एम कालेज मोगा

❒ *आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर* ❒

संस्था के विशेष आकर्षण

1. प्रशिक्षित एवं अनुभवी व मेहनती स्टाफ।
2. पढ़ने के लिये नव सुविधाओं से युक्त कमरे।
3. गत वर्षों की उज्जवल उपलब्धियां शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।
4. मोगा के क्षेत्र में प्रतिष्ठता प्राप्त कालेज।
5. विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष बल।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान।
7. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाएं।

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा प्रधान	देवेन्द्र नाथ शर्मा सैक्रेटरी	योगेश गोयल उपप्रधान
अश्विनी कुमार शर्मा ज्यायंट सैक्रेटरी	साथी विजय कुमार सदस्य	एस.के. शर्मा कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म ॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।४।।

भावार्थः तुम्हारे संकल्प और प्रयत्न मिल कर हों, तुम्हारे हृदय परस्पर मिले हुये हों। तुम्हारे अन्तःकरण मिले रहें। जिसमें परस्पर सहायता से तुम्हारी भरपूर उन्नति हो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस एवं दीप-उत्सव ''दीपावली'' के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल मानसा

प्रमुख विशेषताएं

1. मानसा शहर की अग्रणी शिक्षण संस्था–चार दशकों से समाज की सेवा में
2. आर्य समाज की विचारधारा एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के संदेशों के प्रचार व प्रसार को समर्पित संस्था।
3. विशाल, शानदार, हवादार तीन इमारतें एवं खेल के मैदान की व्यवस्था।।
4. जनरेटर, वाटर कूलर, साफ पानी के लिये आर.ओ. की उत्तम व्यवस्था।
5. नर्सरी से 10+2 (आर्ट्स एवं कामर्स) तक पढ़ाई का समुचित प्रबन्ध।
6. अनुभवी एवं उच्च शिक्षा प्राप्त सुयोग्य अध्यापकगण।
7. कम्प्यूटर शिक्षा, शारीरिक शिक्षा, योग एवं खेलों पर जोर।
8. औपचारिक शिक्षा के साथ साथ धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
9. लड़कियों एवं गरीब वर्ग के विद्यार्थियों को विशेष सुविधाएं।
10. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं एवं घरेलू परीक्षाओं में शानदार परिणाम

निरन्तर प्रगति की ओर

निरंजन लाल आर्य प्रधान	**स्वर्णलता गुप्ता** उपप्रधान	**प्रमोद प्रकाश आर्य** मैनेजर	**अमृतपाल बंसल** मुख्य कोषाध्यक्ष
सुरेन्द्र बंसल जन.सैक्रेटरी आर्य समाज	**कृष्ण कुमार बंसल** सैक्रेटरी	**राधेश्याम** कोषाध्यक्ष	**सुनील मलिक** प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पति वाचं नः स्वदतु ॥

(यजु. 30/3)

हे परमात्मा! सबको सत्कर्म करने और सत्कर्मों का संरक्षण करने की बुद्धि दो। अपने उत्तम ज्ञान से पवित्र करने वाले ज्ञानी से हम सब ज्ञान को पवित्र करें। उत्तम वक्ता द्वारा हम सब वाणी को मधुर बनाएं, जिससे हम सबकी उन्नति हो

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

डी.एम. कालेज आफ एजुकेशन

❒ *आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर* ❒

संस्था के विशेष आकर्षण

1. प्रशिक्षित एवं अनुभवी व मेहनती स्टाफ।
2. पढ़ने के लिये नव सुविधाओं से युक्त कमरे।
3. गत वर्षों की उज्जवल उपलब्धियां शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।
4. मोगा के क्षेत्र में प्रतिष्ठता प्राप्त कालेज।
5. विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष बल।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान।
7. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाएं।

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा प्रधान	देवेन्द्र नाथ शर्मा सैक्रेटरी	योगेश गोयल उपप्रधान
अश्विनी कुमार शर्मा ज्यायंट सैक्रेटरी	साथी विजय कुमार सदस्य	सुषमा शर्मा प्रिंसीपल

गत अन्तरंग सभा की कार्यवाही को पढ़ कर सदस्यों को सुनाते हुये सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जबकि उनके साथ बैठें हैं सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा सभा उप प्रधान। जबकि दूसरे चित्र में सभा उप प्रधान श्रीमती राजेश शर्मा जी, सभा कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल एवं श्री सी.मारकंडा जी तपा बड़े ध्यान से कार्यवाही को सुनते हुये।

अन्तरंग सभा की बैठक में हिस्सा लेते हुये श्री देवेन्द्र नाथ जी शर्मा, श्रीमती राजेश शर्मा जी, श्रीसुधीर शर्मा जी, श्री सी.मारकंडा जी, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, श्री वेद आर्य जी, श्री मुनीष सहगल जी, श्री रातुल शर्मा जी एवं श्री रणजीत आर्य जी।

अन्तरंग सभा की बैठक में हिस्सा लेते हुये श्री राजेन्द्र कौड़ा जी रायकोट, श्री सूर्यकांत जी शौरी, श्री भारतभूषण जी मैनन बरनाला, श्री नीरज सूद जी मोगा, श्री योगेश सूद जी मोरिण्डा, श्री वीरेन्द्र कुमार कौशिक पटियाला, श्री राज कुमार जी जालन्धर, श्री वेद आर्य जी जालन्धर, श्री मुनीष सहगल जी जालन्धर।

रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015–17 RNI No. 26281/74

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा में अपने विचार रखते हुये स्वामी सूर्यदेव जी एवं उनके विचारों को सुनते हुये सभा अधिकारी एवं अन्य अन्तरंग सभा के सदस्य।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा में हिस्सा लेते हुये श्री सोहन लाल सेतिया अबोहर, श्री विजय कुमार साथी मोगा, श्री पी.डी.गोयल बठिंडा, स्वामी सूर्यदेव जी गोनियाना मंडी, श्री देशबन्धु जी चोपड़ा फगवाडा, श्री रणजीत आर्य जी जालन्धर, श्री पुरुषोत्तम चन्द्र शर्मा अमृतसर, श्री अरुण सूद जी लुधियाना, श्री विजय सरीन जी लुधियाना।

गत दिनों आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना के वेद सप्ताह के अवसर पर पधारे सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, सभा उप प्रधान श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा एवं सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज का स्वागत करते हुये आर्य समाज के पदाधिकारी। दूसरे चित्र में इस अवसर पर पधारी आर्य जनता हवन यज्ञ में भाग लेती हुई।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।